सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" किताबें खुद चुप रहती हैं लेकिन जिसने पढ़ लिया उसे बोलना और लड़ना सिखा देती हैं...!!

अज्ञात...

वर्ष-01 अंक-214 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, रविवार 23 अगस्त 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य -2 रुपए

छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री माननीय **श्री भूपेश बघेल जी** को **जन्मदिन** की बधाई एवं **शुभकामनाएं...**

छत्तीसगढ़ के एके खेवइया भूपेश भैय्या...

भूपेश बघेल ने 2018 से 2023 तक छत्तीसगढ़ के तीसरे मुख्यमंत्री के रूप में कार्य करते हुए ग्रामीण अर्थव्यवस्था, किसान कल्याण और क्षेत्रीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए कई महत्वपूर्ण कार्य किए। उनके कार्यकाल के प्रमुख कार्यों और योजनाओं को छत्तीसगढ़ की जनता आज भी याद करती है...

किसान और ग्रामीण अर्थव्यवस्था

कर्ज माफी: लगभग 18 लाख से अधिक किसानों का कृषि ऋण माफ किया।

राजीव गांधी किसान न्याय योजना : फसलों पर प्रति एकड़ इनपुट सब्सिडी प्रदान की गई

गोधन न्याय योजना: गाय का गोबर खरीदने की अनूठी योजना शुरू की।

नरवा, गरवा, घुरवा, बारी: : जल संरक्षण, पशु संवर्धन, जैविक खाद निर्माण और घरेलू बाड़ियों के विकास के लिए यह ग्रामीण विकास योजना लागू

सांस्कृतिक पुनरुत्थान (छत्तीसगढ़िया अस्मिता)

राम वन गमन पर्यटन परिपथ: भगवान राम के छत्तीसगढ़ में वनवास काल के ऐतिहासिक स्थलों को पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया, जिसमें चंदखुरी का कौशल्या माता मंदिर प्रमुख है।

स्थानीय त्योहारों पर अवकाश : हरेली, तीजा, कर्मा जयंती और विश्व आदिवासी दिवस जैसे छत्तीसगढ़ के पारंपरिक त्योहारों पर पहली बार शासकीय अवकाश घोषित किया गया।

छत्तीसगढ़िया ओलंपिक: पारंपरिक स्थानीय खेलों (जैसे गिल्ली-डंडा, भौंरा, बाटी) को बढ़ावा देने के लिए राज्य स्तरीय खेल प्रतियोगिताओं की शुरुआत की।

'बिजली बिल हाफ योजना'

400 यूनिट तक आधा बिल : योजना के तहत घरेलू उपभोक्ताओं द्वारा प्रति माह 400 यूनिट तक की बिजली खपत करने पर उनके बिजली बिल की राशि आधी (50% छूट) कर दी जाती थी।

शिक्षा और स्वास्थ्य

स्वामी आत्मानंद अंग्रेजी माध्यम स्कूल: गरीब और मध्यम वर्ग के बच्चों को मुफ्त में उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम शिक्षा देने के लिए सरकारी स्तर पर इन स्कूलों की श्रृंखला शुरू की गई।

मुख्यमंत्री हाट-बाजार क्लिनिक योजना: दूरदराज और आदिवासी अंचलों के साप्ताहिक बाजारों में मोबाइल मेडिकल वैन के जरिए मुफ्त इलाज और दवाइयां पहुंचाई।

दाई-दीदी क्लिनिक: महिलाओं के लिए विशेष रूप से महिला डॉक्टरों और स्टाफ वाली मोबाइल क्लिनिक सेवा की शुरुआत

आदिवासी और वनवासी कल्याण

तेंदूपत्ता संग्रहण दर में वृद्धि: आदिवासियों की आय बढ़ाने के लिए तेंदूपत्ता की मानक बोरा दर ₹2500 से बढ़ाकर ₹4000 की गई।

लघु वनोपज की खरीदी: राज्य में समर्थन मूल्य पर खरीदी जाने वाली लघु वनोपजों की संख्या 7 से बढ़ाकर 65 से अधिक की गई।

वन अधिकार पत्र: वन भूमि पर आश्रित आदिवासियों को सामुदायिक और व्यक्तिगत वन संसाधन अधिकार पत्र बांटे गए।

शुभेच्छु : नीरज पाल, महापौर भिलाई

भूपेश बघेल

पूर्व मुख्यमंत्री छत्तीसगढ़

संघर्ष से सफलता तक

भूपेश बघेल एक भारतीय राजनेता हैं। उन्होंने दिसंबर 2018 से दिसंबर 2023 तक छत्तीसगढ़ के तीसरे मुख्यमंत्री के रूप में काम किया। उनका जन्म 23 अगस्त 1961 को दुर्ग जिले के पाटन में एक किसान परिवार में हुआ था। वे कांग्रेस पार्टी के प्रमुख नेता हैं।

शुरुआती जीवन और परिवार जन्म तिथि : 23 अगस्त 1961

स्थान: दुर्ग जिला, छत्तीसगढ़ (तत्कालीन मध्य प्रदेश)

माता-पिता: बिंदेश्वरी बघेल और नंद कुमार बघेल

विवाह: मुक्तिश्वरी बघेल के साथ हुआ और उनके बच्चे हैं।

राजनीतिक सफर शुरुआत : 1980 के दशक में यूथ कांग्रेस से राजनीति शुरू की।

विधायक: साल 1993 में पहली बार मध्य प्रदेश विधानसभा के लिए पाटन सीट से चुने गए।

मंत्री पद: छत्तीसगढ़ राज्य के गठन के बाद वे पहले राजस्व, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी और राहत कार्य मंत्री बने।

प्रदेश अध्यक्ष: साल 2014 में छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष बने और पार्टी को मजबूत किया।

मुख्यमंत्री: वर्ष 2018 के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस को बड़ी जीत दिलाई और 17 दिसंबर 2018 को छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री बने।

मुख्य विशेषताएँ :- किसानों और ग्रामीण संस्कृति से उनका विशेष जुड़ाव रहा है। उन्हें छत्तीसगढ़ में ओबीसी समुदाय का एक बड़ा नेता माना जाता है।

भूपेश बघेल छत्तीसगढ़ विधानसभा में दुर्ग जिले के पाटन निर्वाचन क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। उन्होंने 1985 में भारतीय युवा कांग्रेस के सदस्य के रूप में अपने राजनीतिक सफर की शुरुआत की और 1993 में पाटन निर्वाचन क्षेत्र से मध्य प्रदेश विधानसभा के लिए अपना पहला चुनाव जीता। 1998 में वे इसी निर्वाचन क्षेत्र से दोबारा विधायक चुने गए। उन्हें दिग्विजय सिंह के नेतृत्व वाली मध्य प्रदेश सरकार में लोक शिकायत विभाग के राज्य मंत्री के रूप में नियुक्त किया गया और बाद में परिवहन मंत्री के पद पर पदोन्नत किया गया।

बाद में, जब 2000 में छत्तीसगढ़ को राज्य का दर्जा मिला, तो बघेल नए राज्य में राजस्व मंत्री के रूप में नियुक्त होने वाले पहले व्यक्ति थे।

उन्होंने छत्तीसगढ़ विधानसभा में विपक्ष के उपनेता के रूप में भी कार्य किया है। 2018 में आदिवासी राज्य के मुख्यमंत्री बनने से पहले, उन्होंने छत्तीसगढ़ प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया और डेढ़ दशक बाद राज्य में कांग्रेस को सत्ता में वापस लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।भूपेश बघेल सामाजिक सेवाओं में गहरी रुचि रखते हैं। अपने विद्यार्थी जीवन से ही वे अनेक राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों से जुड़े रहे हैं।

वे समाज में सामाजिक सुधारों के पैरोकार रहे हैं। विवाह समारोहों में होने वाली फिजूलखर्ची से बचने के लिए उन्होंने कम खर्च में विवाह को बढ़ावा देने वाला एक अभियान शुरू किया। वे लगभग हर साल सामूहिक विवाह समारोह आयोजित करते हैं, जिससे उन्हें अपार लोकप्रियता और सम्मान प्राप्त हुआ है। मुख्यमंत्री बघेल को समाज में समानता लाने के प्रयासों और सक्रियता के लिए 'महात्मा फुले समता पुरस्कार' से भी सम्मानित किया गया है।

भूपेश बघेल छत्तीसगढ़ को समृद्धि की ओर ले जाने के लिए समर्पित हैं। मुख्यमंत्री के रूप में उनके कार्यों को व्यापक मान्यता मिली है, क्योंकि उनके नेतृत्व में राज्य को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। हाल ही में प्राप्त पुरस्कार भारत के राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद द्वारा प्रदान किया गया 'सर्वश्रेष्ठ राज्य पुरस्कार' है।

खास खबर

स्वास्थ्य शिविर का लाभ उठाया लोगों ने

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

पैगम्बर हजरत मोहम्मद सल्लु अलैहि वसल्लम के जन्मदिन ईद मिलादुन्नबी के सिलसिले आयोजन शुरू हो चुके हैं। अंचल में मिलादुन्नबी का जुलूस 26 अगस्त बुधवार को निकलेगा। इसके पहले ईद मिलादुन्नबी से जुड़े सेवाकार्य जारी है। इसी कड़ी मे सैय्यदी सुन्नी जामा मस्जिद भिलाई-3 में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन जामा मस्जिद परिसर में किया गया। यहां सैकड़ों लोगों ने स्वास्थ्य जांच का लाभ लिया। सभी को निःशुल्क परामर्श व जांच के साथ दवाइयां दी गई। यहां 80 लोगों की निशुल्क आंखों की जांच कर चश्मा नंबर, मोतियाबिंद प्रकरणों की जांच कर निःशुल्क दवा देकर ऑपरेशन के मरीजों जल्दी ही नजदीकी जिला अस्पताल में जाकर उपचार की सलाह दी गई।

प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र भिलाई-3 और आयुष विभाग भिलाई-3 के टीम डॉ. नितिन कश्वप,डॉ. नमिता नंदे नेत्ररोग रायपुर, फार्मासिस्ट विनय निर्मलकर,स्वास्थ्य संयोजिका हेमलता निर्मलकर ,जय सिंह कोठारी, मितानिन नूतन तिवारी, लतिका सरकार ने अपनी सेवाएं दी। वहीं सैय्यदी सुन्नी जामा मस्जिद भिलाई-3 के सदर मुहम्मद रूस्तम, सचिव मोहम्मद नसीम खान, कोषाध्यक्ष इर्शद अहमद,नारायणा लैब भिलाई-3 के मोहम्मद इमरान, मोहम्मद तौहीद (इंचार्ज), स्वास्थ्य विभाग के बी ई टी ओ सैय्यद असलम,तौहीद खान,अजहर खान, अब्दुल हुसैन,मोहम्मद आरिफ, मोहम्मद हाशमी और अब्दुल लतीफ सहित पदाधिकारी मौजूद थे। सुन्नी जामा मस्जिद भिलाई-3 की ओर से ईद मिलादुन्नबी के सिलसिले में निशुल्क रक्तदान शिविर का आयोजन 23 अगस्त को दोपहर में किया गया है। कमेटी ने लोगों से अपील है कि ज्यादा से ज्यादा रक्तदान कर आम जनता के लिए उपलब्ध कराने में सहयोग करें।

थानों में वर्षों से खड़े 343 लावारिस दोपहिया वाहनों की होगी नीलामी, दुर्ग पुलिस ने पूरी की प्रक्रिया

स्वामियों की तलाश के लिए पुलिस ने संभावित मालिकों और परिजनों से संपर्क किया और अखबारों में सार्वजनिक सूचना प्रकाशित कर वैध दस्तावेजों के साथ दावा प्रस्तुत करने का अवसर दिया

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

दुर्ग जिले के विभिन्न थाना परिसरों में वर्षों से खड़े 343 लावारिस और ला-दावा दोपहिया वाहनों का अब विधिवत निराकरण किया जाएगा। दुर्ग पुलिस ने दावा-आपत्ति की प्रक्रिया पूरी कर इन वाहनों की नीलामी की कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार लंबे समय से थानों में वाहन खड़े रहने से परिसरों में जगह की कमी और आवागमन में असुविधा हो रही थी। स्वामियों की तलाश के लिए पुलिस ने संभावित मालिकों और परिजनों से संपर्क किया और अखबारों में सार्वजनिक सूचना प्रकाशित कर वैध दस्तावेजों के साथ दावा प्रस्तुत करने का अवसर दिया था।

निर्धारित अवधि में किसी वैध दावेदार के सामने नहीं आने पर धारा 28 पुलिस एक्ट के तहत एएसटीसी के माध्यम से नीलामी की प्रक्रिया शुरू की गई है। नीलाम होने वाले वाहनों में लूना, स्कूटी, स्कूटर, पल्सर, सीडी-100, पैशन, सीबीजेड, टीवीएस स्पोर्ट, स्टार सिटी सहित विभिन्न कंपनियों के वाहन शामिल हैं। इस कार्रवाई में रक्षित निरीक्षक नीलकंठ वर्मा और रक्षित केंद्र के अधिकारियों-कर्मचारियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। दुर्ग पुलिस ने अपील की है कि यदि किसी का वैध दावा है तो वह दस्तावेजों के साथ थाना भिलाई नगर में संपर्क कर सकता है।

जीवन को सुखपूर्वक अनुशासित करे वही शास्त्र : डॉ.दिव्य चेतन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

छत्तीसगढ़ संस्कृत शिक्षा सेवा संस्थान द्वारा ऑनलाइन संस्कृत महोत्सव में पहली बार काशी की शास्त्रार्थ परंपरा पर सफल आयोजन किया गया। इसमें संस्कृत प्रेमियों ने बड़ी संख्या में सक्रिय उपस्थिति दी। व्याकरण शास्त्र पर केन्द्रित इस विशेष पाण्डित्य पूर्ण संवाद में पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष में शास्त्रीय विमर्श हुआ। शास्त्रार्थ सभा अध्यक्ष काशी के वाचस्पति काशी रत्न आचार्य डॉ.दिव्य चेतन ब्रह्मचारी थे। पूर्व पक्ष से युवा पण्डित हर्ष मित्र एवं उत्तर पक्ष से युवा पंडित अंबरीश तिवारी ने क्रमशः तर्कों के अपना-अपना पक्ष रखा।

प्रमाणों के माध्यम से दोनों युवाचार्यों ने विनम्रतापूर्वक व्याकरण शास्त्र के सिद्धांतों को रखते हुए परम्परागत शास्त्रार्थ पद्धति के आधार पर विषय को स्पष्ट किया। अध्यक्षीय उद्बोधन में काशी रत्न आचार्य डॉ.दिव्य चेतन ब्रह्मचारी ने कहा कि- जो शास्त्र सुखपूर्वक जीवन को अनुशासित करे वही शास्त्र है। यह केवल ज्ञान प्राप्ति का साधन नहीं, अपितु जीवन को अनुशासित और संस्कारित करने का मार्ग है। शास्त्रीय परम्परा समाज में शान्ति, आनन्द और सद्भावनाओं को बढ़ावा देती हैं।

कार्यक्रम का सफल संयोजन, सचिव डॉ. मनीष शर्मा ने किया। संस्थान विगत 7-8 दिन से लगातार ऐसे आयोजनों से लगातार संस्कृत प्रेमियों को जोड़े हुवे है। एक दिन पूर्व "छत्तीसगढ़ी भाषा पर संस्कृत का प्रभाव" विषय पर दिग्विजय महाविद्यालय राजनांदगांव के प्रो.ललित प्रधान का रोचक व्याख्यान हुआ। इसमें आचार्य डॉ.महेश चन्द्र शर्मा की पुस्तक "छत्तीसगढ़ में संस्कृत" का भी उल्लेख हुआ और संस्कृत प्रेमियों ने इसकी मुक्तकण्ठ से सराहना की। संस्थान के अध्यक्ष आचार्य नवीन शर्मा, संगठन सचिव आचार्य मुकेश चौबे, दुर्ग जिला संरक्षक आचार्य डॉ.महेश चन्द्र शर्मा, खैरागढ़ जिला संयोजिका डॉ.पूर्णिमा केलकर, दुर्ग ज़िला संयोजक हेमन्त शर्मा, रायपुर से उर्मि देवी, डॉ.निर्मला पाण्डेय, डॉ.रूपेन्द्र तिवारी एवं संस्कृत भारती के डॉ. दादूभाई त्रिपाठी समेत बड़ी संख्या में संस्कृत प्रेमी जन संस्कृत महोत्सव में संलग्न हैं। श्रावणी पूर्णिमा तक यह आयोजन चलेगा।

मुख्य न्यायाधिपति रमेश सिन्हा ने दुर्ग में नवीन न्यायालय भवन के निर्माण के लिए किया भूमिपूजन

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

जिला दुर्ग के न्यायिक इतिहास में आज एक महत्वपूर्ण एवं गौरवपूर्ण अध्याय जुड़ा, जब छत्तीसगढ़ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति रमेश सिन्हा के कर कमलों से नवीन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायालय भवन, दुर्ग के निर्माण हेतु भूमिपूजन एवं Foundation Stone Laying Ceremony संपन्न हुई। इस अवसर पर न्यायिक गरिमा, आधुनिक न्यायिक अधोसंरचना, डिजिटल न्याय व्यवस्था तथा वैकल्पिक विवाद समाधान के क्षेत्र में जिले की महत्वपूर्ण पहलों का भी शुभारंभ एवं लोकार्पण किया गया। इस अवसर पर मुख्य न्यायाधिपति के साथ न्यायाधिपति पी.पी. साहू, न्यायाधिपति नरेश कुमार चंद्रवंशी, न्यायाधिपति रवीन्द्र कुमार अग्रवाल, न्यायाधिपति विभु दत्त गुरु एवं न्यायाधिपति अमितेंद्र किशोर प्रसाद की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश, दुर्ग के. विनोद कुजूर के स्वागत उद्बोधन से हुआ। उन्होंने मुख्य न्यायाधिपति एवं उपस्थित न्यायाधीशगण का स्वागत करते हुए नवीन न्यायालय भवन की आवश्यकता, न्यायिक अधोसंरचना के विकास तथा भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप आधुनिक न्यायिक परिसर की परिकल्पना पर प्रकाश डाला। इसके पश्चात मुख्य न्यायाधिपति रमेश सिन्हा ने नवीन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायालय भवन, दुर्ग के निर्माण हेतु विधिवत भूमिपूजन किया गया। प्रस्तावित नवीन भवन से न्यायिक कार्यों के लिए बेहतर, सुव्यवस्थित एवं आधुनिक वातावरण उपलब्ध होने के साथ-साथ न्यायिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं, कर्मचारियों तथा न्यायार्थियों के लिए सुविधाओं में व्यापक विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। कार्यक्रम में न्यायाधिपति पी.पी. साहू, न्यायाधिपति नरेश कुमार चंद्रवंशी सहित अन्य न्यायाधीशगण की गरिमामयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम के अगले चरण में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, दुर्ग द्वारा सामुदायिक मध्यस्थता के विषय पर तैयार की गई पुस्तक 'संधि सेतु' का मुख्य न्यायाधिपति रमेश सिन्हा द्वारा विमोचन किया गया। 'संधि सेतु' पुस्तक का उद्देश्य सामुदायिक स्तर पर संवाद, सहमति एवं मध्यस्थता के माध्यम से विवादों के समाधान की अवधारणा को सामने लाना तथा विवाद-मुक्त एवं सौहार्दपूर्ण ग्रामीण समाज की दिशा में किए जा रहे प्रयासों को दस्तावेजीकृत करना है। यह पहल न्याय को केवल न्यायालय तक सीमित न रखते हुए समाज के बीच संवाद एवं समझ के माध्यम से विवादों के समाधान की भावना को सशक्त करती है।

कार्यक्रम के मुख्य उद्बोधन में मुख्य न्यायाधिपति रमेश सिन्हा द्वारा न्यायिक व्यवस्था में आधुनिक अधोसंरचना, तकनीकी नवाचार तथा जन-केंद्रित न्याय व्यवस्था के महत्व पर प्रकाश डाला गया। उन्होंने नवीन न्यायालय भवन के निर्माण को दुर्ग जिले की न्यायिक व्यवस्था के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि बताते हुए भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप न्यायिक संस्थानों को और अधिक सुदृढ़ किए जाने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने डिजिटल न्यायिक पहलों तथा सामुदायिक मध्यस्थता जैसे प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि न्याय व्यवस्था की वास्तविक सफलता तभी है, जब न्याय अधिक सुलभ, सरल, पारदर्शी और जनसामान्य के निकट हो।

कार्यक्रम के अवसर पर न्यायिक अधिकारीगण, जिला न्यायपालिका के अधिकारी एवं कर्मचारी, अधिवक्तागण, विधिक सेवा प्राधिकरण से जुड़े प्रतिनिधि, विभिन्न प्रशासनिक अधिकारी, पैरालीगल वॉलंटियर्स, सामाजिक प्रतिनिधि तथा प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम के अंत में प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायालय, दुर्ग श्रीमती सुमन एक्का द्वारा आभार प्रदर्शन किया गया। उन्होंने मुख्य न्यायाधिपति, न्यायाधीशगण, न्यायिक अधिकारियों, प्रशासनिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं, मीडिया प्रतिनिधियों एवं कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग प्रदान करने वाले सभी संबंधितों के प्रति आभार व्यक्त किया। नवीन न्यायालय भवन का भूमिपूजन, 'संधि सेतु' का विमोचन तथा डिजिटल न्यायिक पहलों का शुभारंभ-तीनों आयोजन दुर्ग जिले की न्याय व्यवस्था को आधुनिक, सुलभ, तकनीक-सक्षम एवं जन-केंद्रित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में सामने आए।

भूपेश बघेल के जन्मदिन पर जिला अस्पताल में किया रक्तदान शिविर का हुआ आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के जन्मदिन के शुभ अवसर पर दक्षिण ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भाई गुरदीप सिंह भाटिया के सौजन्य से जिला चिकित्सालय, दुर्ग में रक्तदान झ सेवा संकल्प शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में दक्षिण ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष गुरदीप सिंह भाटिया पश्चिम ब्लॉक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष आनंद कपूर ताम्रकार, ललित उके जी, मुकेश राठी जी,शहंशाह आलम सहित करीब 35 यूनिट रक्तदान कर सेवा संकल्प को सार्थक किया।

सभी ने अपने नेता के जन्मदिन को सेवा दिवस के रूप में मनाया। इस अवसर पर शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष धीरज बाकलीवाल, प्रदेश कांग्रेस कमेटी के महामंत्री राजेंद्र साहू, क्षितिज चंद्राकर, पूर्व महापौर आरएन वर्मा, पूर्व सभापति राजेश यादव, प्रभारी महामंत्री रायसिंह ढीकोला, महामंत्री पोषण साहू, दुष्यंत देवांगन, दीपक चावड़ा, प्रकाश जोशी, मुकेश साहू, कार्यालय प्रभारी सुनीत घोष सहित अहमद चौहान, जयंत देशमुख, दीपक जैन, गोलू गभने ,गौरव उमरे, आयुष शर्मा, अमित मिश्रा का विशेष योगदान रहा। कार्यकर्ताओं ने कहा झ आपका एक यूनिट रक्त, किसी की जिंदगी बचा सकता है।

निधन

कल्याणी चक्रवर्ती

भिलाई। सुपेला निवासी श्रीमती कल्याणी चक्रवर्ती पत्नी स्व. ओ.एन. चक्रवर्ती का दुःखद निधन हो गया। वे आनंद, सुकुमार एवं बीनापानी की पूज्य माता थीं। उनकी अंतिम यात्रा कल 24 अगस्त सोमवार को प्रातः 11 बजे निज निवास प्रियदर्शिनी परिसर पूर्व, सुपेला, भिलाई से रामनगर मुक्तिधाम के लिए निकलेगी। जहां उनका अंतिम संस्कार किया जाएगा।

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को जन्मदिन की हार्दिक बधाई

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई-दुर्ग

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महामंत्री एवं पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी को जन्मदिन की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

22 अगस्त को शाम आयोजित जन्मदिन समारोह में नई दृष्टिबिंदु परिवार की ओर से उनसे भेंट कर शुभकामनाएं प्रेषित की। इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी ने साध्य दैनिक नई दृष्टिबिंदु परिवार के सदस्य अद्वितीय तिवारी, सत्यम सिंह और सत्यम साहू से औपचारिक परिचय प्राप्त कर उन्हें भी शुभकामनाएं दी। ईश्वर से आपके उत्तम स्वास्थ्य, दीर्घायु एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं।

सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
दुर्ग, रविवार 23 अगस्त 2026
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार

" कह कर सोचना और सोच कर कहना व्यक्ति का व्यक्तित्व बदल देता है...!!

अज्ञात...

छत्तीसगढ़ में फिर सक्रिय होगा मानसून, 27 अगस्त तक भारी बारिश के आसार

अगले चार दिनों में अधिकतम तापमान में कोई विशेष बदलाव नहीं होगा, लेकिन बारिश और बादलों के कारण उमस बनी रहेगी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ में मानसून एक बार फिर सक्रिय हो गया है। मौसम विभाग के अनुसार अगले एक सप्ताह तक प्रदेश में बारिश का दौर जारी रहेगा। 27 अगस्त तक कई जिलों में हल्की से मध्यम बारिश के साथ उत्तर और मध्य छत्तीसगढ़ में भारी बारिश की संभावना है।

मौसम विभाग ने प्रदेश के 12 जिलों में येलो अलर्ट जारी किया है। इनमें राजनांदगांव, कबीरधाम, बेमेतरा, मुंगेली, कोरबा, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही, बिलासपुर, सूरजपुर, बलरामपुर, मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर, कोरिया और जशपुर शामिल हैं। इन जिलों में तेज बारिश के साथ गरज-चमक की स्थिति बन सकती है।

प्रदेश के बाकी 21 जिलों में भी गरज-चमक के साथ हल्की बारिश होने के आसार हैं, हालांकि वहां भारी बारिश की चेतावनी नहीं है। विभाग के अनुसार अगले पांच दिनों में अधिकतम तापमान में कोई विशेष बदलाव नहीं होगा, लेकिन बारिश और बादलों के कारण उमस बनी रहेगी।

मौसम विभाग ने लोगों को गरज-चमक और आकाशीय बिजली के दौरान खुले स्थानों, पेड़ों और बिजली के खंभों से दूर रहने तथा नदी-नालों और जलभराव वाले क्षेत्रों में सावधानी बरतने की सलाह दी है।

खास खबर

ब्लू वाटर हादसे में डूबे युवक की तलाश के लिए आएगी नेवी की स्पेशल टीम, सीएम के निर्देश पर विशाखापट्टनम से 11 सदस्यीय दल रवाना

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

ब्लू वाटर दुर्घटना में डूबे युवक की खोज के लिए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के निर्देश पर भारतीय नौसेना के विशेष गोताखोर दल को बुलाया गया है। यह दल कल विशाखापट्टनम से रायपुर पहुंचेगा। ईस्टर्न नेवल कमांड, विशाखापट्टनम की इस विशेष टीम में एक अधिकारी और 10 विशेषज्ञ गोताखोर शामिल हैं। टीम दोपहर 2 से 3 बजे के बीच रायपुर पहुंचेगी और उसके बाद सर्च ऑपरेशन शुरू करेगी। मुख्यमंत्री साय ने घटना की जानकारी मिलते ही हरसंभव संसाधन उपलब्ध कराने के निर्देश दिए थे। इसी के तहत पानी के भीतर सर्च और रेस्क्यू में दक्ष नौसेना के गोताखोरों की मदद ली जा रही है।

शासकीय हाई स्कूल में प्रतिभा सम्मान समारोह, मेधावी छात्र-छात्राएं सम्मानित

नई दृष्टिबिंदु / सहसपुरदल्ली

शासकीय हाई स्कूल सहसपुरदल्ली में ग्राम पंचायत सहसपुरदल्ली के तत्वावधान में प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती की पूजा-अर्चना से हुई। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि ग्राम पंचायत सहसपुरदल्ली की सरपंच ज्योति भुवन गंधर्व रहीं, वहीं अध्यक्षता शाला विकास समिति के अध्यक्ष देव लाल साहू ने की।

समारोह में विनोबा एप में उत्कृष्ट कार्य के लिए पूर्व प्रभारी प्राचार्य मीरा वर्मा को पुष्प गुच्छ देकर सम्मानित किया गया। सरपंच द्वारा कक्षा पहली से दसवीं तक प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को प्रतीक चिन्ह एवं मेडल प्रदान किए गए। संकुल प्राचार्य मिलिंद मुदलियार ने सभी बच्चों को सफलता के नाम एक पौधा गमले सहित भेंट किया। संकुल समन्वयक अवध राम वर्मा ने बच्चों को शुभकामनाएं दीं। कार्यक्रम का संचालन व्याख्याता स्वाति जैन ने किया। इस अवसर पर खेमचंद साहू, पोषण साहू, कैलाश यादव, भुवन गंधर्व, वंदिता महोबिया, विजिया लहरे, शबनम खान, कमल किशोर मिश्रा, विनोद कुमार अलमोरे, उपेन्द्र कुमार साहू, जितेन्द्र कुमार हिरवानी, मोहम्मद इकबाल खान सहित शिक्षक, छात्र-छात्राएं एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

बारिश भी नहीं डिगा पाई आस्था, छाता लेकर सड़कों पर बैठकर सुनी शिवकथा

बोलबम सेवा एवं कल्याण समिति द्वारा किया गया शिवमहापुराण कथा का आयोजन

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

बोल बम सेवा एवं कल्याण समिति द्वारा जयंती स्टेडियम में आयोजित शिवमहापुराण कथा के छठवें दिन आस्था का जनसैलाब उमड़ पड़ा। पूरे दिन झमाझम बारिश के बावजूद लाखों शिवभक्तों की भीड़ नहीं घटी। पांचों पंडाल सुबह 11 बजे से ही भर गए, बाद में श्रद्धालु सड़कों, दुकानों और आसपास की इमारतों में छाता लगाकर कथा सुनते रहे। कथा में अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा ने कहा, छह दिन से पानी बरस रहा है फिर भी लाखों लोग आ रहे हैं, यह शिव के प्रति प्रेम है, शिव अपने भक्तों को खाली हाथ नहीं लौटाएंगे।

रावण नहीं, दुष्कर्मियों का पुतला जलाओ - प्रदीप मिश्रा

व्यासपीठ से पंडित मिश्रा ने कहा कि छोटी बच्चियों के साथ हो रहे अपराधों पर चिंता जताते हुए कहा, रावण ने सीता हरण किया तो आज तक पुतला जलता है। अब समय है कि छोटी बच्चियों से गलत कृत्य करने वालों का पुतला जलाना शुरू करो। उन्होंने कहा कि बेटियों को शस्त्र और शास्त्र दोनों की विद्या देना जरूरी है। बेटियों को चूल्हा-चौकी तक सीमित न रखें। झांसी की रानी, रानी दुर्गावती, अहिल्याबाई जैसी वीरांगनाओं को शस्त्र चलाने की शिक्षा दी गई थी। डोंगरगढ़ की मां बमलेश्वरी की कथा सुनाते हुए उन्होंने बताया कि बम शब्द शिव के डमरू के नाद से निकला है।

उपमुख्यमंत्री समेत कई जनप्रतिनिधि शामिल

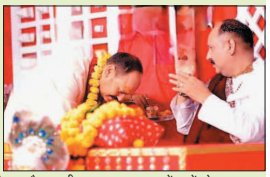

कथा में उपमुख्यमंत्री व गृहमंत्री विजय शर्मा, विधायक रिकेश सेन, ललित चंद्राकर, डोमनलाल कोसेर्वाड़ा, राकेश पांडेय, सरस्वती बंजारे, डॉ. ममता साहू, अरुण वोरा सहित कई अतिथि शामिल हुए।

भिलाई में दिखे दूसरे 'प्रदीप मिश्रा', भक्तों ने समझा असली कथावाचक, लेने लगे आशीर्वाद

जयंती स्टेडियम में चल रही अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक पंडित प्रदीप मिश्रा की शिवमहापुराण कथा अपने समापन की ओर है। रविवार को कथा का विसर्जन होगा। सावन के महीने में एक ही स्थान, एक ही आयोजक और एक ही कथावाचक द्वारा लाखों भक्तों को एक जगह एकत्रित करने का विश्व रिकॉर्ड भी इस आयोजन ने बना लिया है। भक्ति के इस माहौल के बीच एक रोचक और दिलचस्प नजारा देखने को मिला। महादेव के परम भक्त और पंडित प्रदीप मिश्रा के अनन्य अनुयायी देवीलाल साहू आकर्षण का केंद्र बन गए। देवीलाल साहू पहली नजर में पंडित प्रदीप मिश्रा के हमशक्ल नजर आते हैं। जयंती स्टेडियम में मौजूद लाखों श्रद्धालुओं में कई भक्तों ने देवीलाल साहू को ही पंडित प्रदीप मिश्रा समझ लिया और आशीर्वाद लेने के लिए उनके पास पहुंचने लगे। कुछ देर तक वे भक्तों के आकर्षण और सेल्फी का केंद्र बने रहे। करीबी बताते हैं कि जब से देवीलाल साहू ने पंडित प्रदीप मिश्रा की कथा सुनना शुरू किया है, उनकी जीवनशैली में व्यापक बदलाव आया है। स्वयं में शिवभक्त और ईश्वरीय चमत्कार के प्रतीक बने देवी भाई की सादगी और भक्ति ने सभी का मन मोह लिया है।

ब्लैक करेंसी स्कैम : अरबों की ठगी करने वाले अंतर्राज्यीय गिरोह का पदार्फाश, 7 आरोपी गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

रायपुर कमिश्नरेट पुलिस ने वॉश-वॉश यानी ब्लैक करेंसी स्कैम के जरिए देशभर में अरबों की ठगी करने वाले अंतर्राज्यीय गिरोह का पदार्फाश किया है। पुलिस आयुक्त डॉ. संजीव शुक्ला के निर्देशन में एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट और तेलीबांधा पुलिस की संयुक्त टीम ने पुणे के खंडाला स्थित एक रिसॉर्ट में छापा मारकर 7 अंतर्राज्यीय ठगों को रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। आरोपियों के कब्जे से 4 करोड़ से अधिक नकद, 17 मोबाइल, काले नोट के आकार के पेपर, कांच की प्लेटें और अन्य सामग्री जब्त की गई है। इस मामले में पहले ही नागपुर से दो महिला आरोपियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। इस तरह अब तक कुल 9 आरोपी पकड़े जा चुके हैं।

रायपुर के कारोबारी से 1.13 करोड़ की ठगी

गिरोह ने रायपुर के एक प्रार्थी को रकम दोगुनी करने का झांसा देकर 1.13 करोड़ रुपये की ठगी की थी। थाना तेलीबांधा में अपराध क्रमांक 330/26 धारा 318(4), 61(2) इठर के तहत मामला दर्ज किया गया था। साइबर टीम ने जब्त मोबाइलों की चैट और डिजिटल साक्ष्यों के विश्लेषण से आरोपियों को पुणे में लोकेट किया।

पुलिस टीम ने एक सप्ताह तक कैंप कर निगरानी के बाद खंडाला के रिसॉर्ट में दबिश दी। उस वक्त आरोपी वाराणसी के एक व्यक्ति को रकम दोगुनी करने के नाम पर बुलाकर करोड़ों रुपये लेकर ठग रहे थे। टीम ने उन्हें रंगे हाथ पकड़ा। सभी को ट्रांजिट रिमांड पर रायपुर लाया गया है।

2005 से सक्रिय है गिरोह, 100 से ज्यादा लोगों को ठगा

पूछताछ में सामने आया कि गिरोह 2005 से सक्रिय है और अब तक देशभर में 100 से ज्यादा लोगों से अरबों रुपये ठग चुका है। गिरोह के सरगना ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव उर्फ योगी, प्रवीण कुमार श्रीवास्तव उर्फ कैप्टन उर्फ शेट्टी उर्फ रेड्डी और मनोज कुमार श्रीवास्तव उर्फ बड़े सर हैं।

गिरोह खुद को "डी ग्रुप कंपनी (दाऊद ग्रुप)" से जुड़ा बताकर रौब जमाता था। कैप्टन और बड़े सर जैसी कोड भाषा में बात करते थे। पीड़ितों को प्रभावित करने के लिए बड़े नेताओं और फिल्मी सितारों के साथ फोटो दिखाते थे और निजी गनमैन भी साथ रखते थे।

तरीका-ए-वारदात - वॉश-वॉश स्कैम

आरोपी खुद को प्रभावशाली व्यक्ति और विदेशी निवेशकों से जुड़ा बताते थे। दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, हैदराबाद, हरियाणा, आगरा, राजस्थान, गुजरात, नागपुर के फाइव स्टार होटलों में बुलाकर केमिकल से काले कागज को असली नोट में बदलने का नकली प्रदर्शन करते थे। पहले से रखे असली नोट दिखाकर विश्वास जीतते और फिर विदेशी केमिकल, हाई-पावर केमिकल, फाइल प्रोसेसिंग, सुरक्षा मंजूरी के नाम पर किस्तों में रकम ऐंठ लेते थे। आरोपी प्रवीण और मनोज पहले भी मुंबई और वाराणसी में ठगी के मामलों में जेल जा चुके हैं।

गिरफ्तार आरोपी

ज्ञान प्रकाश श्रीवास्तव उर्फ योगी (46) गुड़गांव हरियाणा, प्रवीण कुमार श्रीवास्तव उर्फ कैप्टन (52) वाराणसी, मनोज कुमार श्रीवास्तव उर्फ बड़े सर (55) वाराणसी, विवेक सिंह (48) वाराणसी, शुभम पांडेय (37) जौनपुर, हाल - मुंबई, योगेन्द्र चौहान (48) जौनपुर, बालमुकुंद दीक्षित (40) जौनपुर शामिल हैं।

संपादकीय

तुष्टिकरण के लिए राष्ट्रीय गीत पूरा नहीं गाएगी कांग्रेस

राजनीति तब सफल मानी जाती है जब कोई राजनीतिक दल एक के बाद कई चुनाव जीतता है और राजनीति तब असफल मानी जाती है जब कोई राजनीतिक एक के बाद एक कई चुनाव हारता जाता है और उसके निकट भविष्य में कोई चुनाव जीतने की उम्मीद नहीं बची रहती है। जीतने वाले दल को मालूम रहता है कि उसे चुनाव जीतने के लिए क्या करना है। उसके पास पांच साल समय रहता है जीतने के लिए बहुत कुछ करने को और वह करता भी है इसलिए सत्तारूढ़ दल के जीतने की उम्मीद ज्यादा रहती है और कोई काम न करने के कारण विपक्ष के जीतने की उम्मीद कम रहती है। ऐसे में विपक्ष चुनाव जीतने के लिए कुछ न कुछ ऐसा करता है जिससे उसको उम्मीद रहती है कि मैं ऐसा करूंगा तो जीतने की उम्मीद रहेगी।कांग्रेस ऐसी राजनीतिक पार्टी है जो अपने नेता राहुल गांधी के कारण चुनाव हार जाती है, लेकिन वह उन्हें बदल नहीं सकती इसलिए वह नए नए उपाय सोचती है कि ऐसा करने पर कांग्रेस चुनाव जीत सकती है। राष्ट्रीय गीत पूरा नहीं गाने का फैसला इसी तरह का उपाय माना जा रहा है।

राष्ट्रीय गीत वंदे मातरम को पूरा गाने को लेकर कांग्रेस का वर्तमान का विरोध तब विवाद का विषय बना जब कांग्रेस मुख्यालय में इसके गायन के दौरान ऐसा कुछ हुआ जिसको लेकर कहा गया कि कांग्रेस मुख्यालय में राष्ट्रीय गीत का अपमान किया गया है। इस पर कांग्रेस की तरफ सफाई दी गई लेकिन विवाद थमा नहीं जब गोवा व केरल में भी पूरा राष्ट्रीय गीत नहीं गाया गया और कांग्रेस अध्यक्ष एम खरगे ने कहा कि गोवा मे उन्होंने वही गाया जो राष्ट्रवादी नेताओं महात्मा गांधी,सरदार वल्लभभाई पटेल, अटल बिहारी वाजपेयी ने गाया था। इस मौके पर खरगे ने यह तर्क भी दिया कि यदि उन्होंने जितना वंदे मातरम गाया है वह अपराध है तो उन नेताओं के खिलाफ भी मामले दर्ज किए जाने चाहिए जिन्होंने इसे उसी तरह गाया। मैंने वही किया जो पिछले 80 वर्षों से हो रहा है।कांग्रेस अध्यक्ष देश के बड़े नेताओं की आड़ लेकर अपनी गलती को सही बताना चाह रहे हैं लेकिन राष्टीय गीत के सम्मान का कानून बन जाने के बाद माना तो यह जाएगा कि कांग्रेस अध्यक्ष ने कानून की जानकारी होते हुए भी कानून का पालन नहीं किया और राष्ट्रीय गीत का अपमान किया है।

इससे साफ हो जाता है कि कांग्रेस राष्ट्रीय गीत को लेकर राजनीति करना चाहती है।राष्ट्रीय गीत के मात्र दो पद गाना इस देश की परंपरा रही है कांग्रेस इस परंपरा को सही बताना चाहती है यानी राष्ट्रीय गीत का सम्मान वह जितना करती आई है उतना ही करेगी। भाजपा ने वंदे मातरण के 150 वर्ष पूरे होने पर देश भर में 7 नवंबर 2025 से 7 नवंबर 2026 तक समारोह आयोजित करने का फैसला किया और साथ ही इसे पूरा गाने के लिए और इसका अपमान रोकने के लिए अगस्त 2026 को कानून भी बनाया है। इस कानून के तहत राष्ट्रीय गीत का अपमान करने व इसके गायन में बाधा डालना दंडनीय अपराध हो गया है। ऐसा करके भाजपा ने अपने आपको राष्ट्रवादी पार्टी साबित किया और यही कांग्रेस को पसंद नहीं आ रहा है कि भाजपा उससे ज्यादा राष्ट्रवादी पार्टी कैसे हो सकती है इसलिए वह अपनी परंपरा की बात कर, पुराने नेताओं की बात कर खुद का सही साबित करने का प्रयास कर रही है और खुद को भाजपा से ज्यादा राष्ट्रवादी साबित करने का प्रयास कर रही है।

कांग्रेस बता रही है कि 28 अक्टूबर 1937 को कांग्रेस के कोलकाता अधिवेशन में तय हुआ था कि वंदे मातरम के शुरू के दो छंद गाए जाएंगे,तब से यही गाया जा रहा है। वह यह नहीं बता रही है कि 1896 से लेकर 1936 तक कांग्रेस के सभी अधिवेशनों में वंदे मातरम के पूरे छंद गाए जाते थे। कट्टर सांप्रदायिक और भारत विभाजन की मांग करने वाले मुस्लिम लीग दवाब में वंदेमातरम के दो पद गाने का फैसला किया गया। यह शुध्द रूप से मुस्लिम तुष्टिकरण के लिए किया गया और आड़ ली गई गुरुदेव रविंद्रनाथ टैगोर की कि उनके सुझाव पर ऐसा किया गया। यह नहीं बताया जाता है कि गुरुदेव ने यह सुझाव तब दिया था जब पं.नेहरू सहित अनेक कांग्रेस नेताओं ने कहा था कि जिन पंक्तियों पर मुस्लिमों का आपत्ति है,हमे हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए उस पर जोर नहीं देना चाहिए। सच तो यह माना जाता है कि गुरुदेव को हिंदू-मुस्लिम एकता के नाम पर राजी किया गया था।

आजादी के समय कांग्रेस की जो मानसिकता थी, वह कभी बदली नहीं इसलिए आजादी के बाद भी वह राष्ट्रवादी पार्टी होने पर गर्व करते हुए राष्ट्रीय गीत को जो सम्मान देश में मिलना था, उसे देने के लिए सोचा नहीं। भाजपा तो वह काम खुशी खुशी करती है जो काम कांग्रेस आजादी के बाद नहीं कर सकी है,इससे भाजपा को मौका मिलता है खुद को कांग्रेस को ज्यादा राष्ट्रवादी साबित करने और भाजपा चूकती नहीं है। पीएम मोदी की राजनीति में राष्ट्रवाद भी एक ऐसा मुद्दा जिसके कारण भाजपा को कांग्रेस से ज्यादा वोट मिलता है।हर चुनाव के पहले भाजपा इसे मुद्दा बनाती है, इस बार भी अगले साल होने वाले कई चुनावों में यह मुद्दा रहेगा।कांग्रेस कमजोर है मुस्लिम वोट न मिलने के कारण इसलिए वह सोचती है कि यूपी के चुनाव में उसे इसी आधार पर वोट मिल सकता है कि उसने वंदे मातरम के पूरा गायन का विरोध किया।वह मान रही है कि वंदे मातरम का अपमान करने पर उसे अपना मुस्लिम वोट बैंक वापस मिल सकता है।कांग्रेस के लिए यह कोई नई बात नहीं है क्योंकि वह तो आजादी के पहले और आजादी के बाद भी ऐसा करती रही है। वह अपने फायदे की सोच रही है,देश के बारे मे नहीं सोच रही है। यही फर्क है आज भाजपा और कांग्रेस में।

आस्था का सम्मान, लेकिन गलत बातों पर सवाल जरूरी

डॉ. सत्यवान सौरभ

धर्म मनुष्य के जीवन में केवल पूजा-पद्धति या कर्मकांड का विषय नहीं है। वह उसकी आस्था, संस्कृति, नैतिकता, परंपरा और जीवन-दृष्टि से जुड़ा हुआ विषय है। धार्मिक ग्रंथों ने हजारों वर्षों से समाज को नैतिक मूल्यों, कर्तव्य, करुणा, संयम, सत्य और परोपकार का संदेश दिया है। यही कारण है कि करोड़ों लोग धार्मिक पुस्तकों को श्रद्धा के साथ पढ़ते और अपने जीवन में उनसे प्रेरणा लेते हैं। लेकिन श्रद्धा का अर्थ यह नहीं हो सकता कि किसी भी पुस्तक में लिखी प्रत्येक बात को बिना प्रश्न किए, बिना संदर्भ समझे और बिना तर्क की कसौटी पर परखे स्वीकार कर लिया जाए।

आज सबसे जरूरी प्रश्न यही है कि क्या धार्मिक पुस्तकों में लिखी हर बात को अक्षरशः सत्य मानना चाहिए? यदि किसी कथन में ऐतिहासिक परिस्थिति की छाप है, यदि वह किसी विशेष सामाजिक व्यवस्था को प्रतिबिंबित करता है, यदि उसका अर्थ आज के संदर्भ में अलग हो गया है या यदि किसी कथन की व्याख्या मनुष्य के बीच भेदभाव को बढ़ावा देती है, तो उस पर सवाल उठाना क्या धर्म-विरोध है? निश्चित रूप से नहीं। सवाल करना ज्ञान की पहली सीढ़ी है और स्वस्थ समाज की पहचान भी। धर्म और आलोचनात्मक चिंतन को एक-दूसरे का विरोधी मानना एक बड़ी भूल है। आस्था व्यक्ति का निजी विश्वास हो सकती है, लेकिन जब किसी धार्मिक विचार की व्याख्या सार्वजनिक जीवन, कानून, शिक्षा, सामाजिक संबंधों या नागरिक अधिकारों को प्रभावित करने लगे, तब उस विचार पर सार्वजनिक विमर्श स्वाभाविक और आवश्यक हो जाता है। लोकतंत्र में किसी विचार को केवल इसलिए आलोचना से मुक्त नहीं किया जा सकता कि वह धार्मिक संदर्भ से आया है।

यहाँ एक महत्वपूर्ण अंतर समझना होगा—धर्म की आलोचना और धार्मिक व्यक्ति का अपमान अलग-अलग बातें हैं। किसी धार्मिक पुस्तक के किसी कथन, उसकी व्याख्या या उसके सामाजिक प्रभाव पर प्रश्न उठाना किसी धर्मावलंबी के सम्मान को ठेस पहुँचाने के उद्देश्य से नहीं होना चाहिए। आलोचना विचार की होनी चाहिए, व्यक्ति की नहीं। तर्क का जवाब तर्क से दिया जाना चाहिए, भावनात्मक आक्रोश से नहीं।

हमारे समाज में अक्सर यह प्रवृत्ति दिखाई देती है कि जब किसी धार्मिक ग्रंथ की किसी बात पर प्रश्न उठता है तो चर्चा का केंद्र उस प्रश्न का उत्तर देने के बजाय प्रश्न पूछने वाले की नीयत बन जाती है। उसे धर्म-विरोधी, परंपरा-विरोधी या समाज-विरोधी कह दिया जाता है। इससे संवाद बंद होता है और कट्टरता बढ़ती है। यदि किसी प्रश्न का उत्तर उपलब्ध है तो उसे शांतिपूर्वक सामने रखा जाना चाहिए। यदि किसी कथन की अलग-अलग व्याख्याएँ हैं तो उन पर चर्चा होनी चाहिए। और यदि कोई बात ऐतिहासिक संदर्भ में थी, तो उसके संदर्भ को समझाया जाना चाहिए। धार्मिक ग्रंथों को उनके समय और परिस्थितियों से काटकर पढ़ना भी समस्या पैदा कर सकता है। हजारों वर्ष पहले का समाज आज के समाज जैसा नहीं था। उस समय की सामाजिक संरचना, शासन व्यवस्था, शिक्षा, विज्ञान, परिवार व्यवस्था और आर्थिक परिस्थितियाँ अलग थीं। इसलिए किसी प्राचीन कथन का अर्थ समझने के लिए उसके मूल संदर्भ, भाषा, प्रतीकों और तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों को समझना आवश्यक है। आधुनिक समय में उसी कथन की शाब्दिक व्याख्या करने से कई बार ऐसी धारणाएँ पैदा हो सकती हैं जो मूल संदर्भ से बिल्कुल अलग हों।

इसीलिए धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन केवल श्रद्धा से नहीं, बल्कि ज्ञान, इतिहास, भाषा और दर्शन की दृष्टि से भी होना चाहिए। श्रद्धा मनुष्य को प्रेरणा देती है, जबकि विवेक उसे सही अर्थ समझने में सहायता करता है। दोनों का संतुलन समाज को अधिक परिपक्व बनाता है। सबसे संवेदनशील विषय तब सामने आता है जब किसी धार्मिक कथन की व्याख्या के आधार पर स्त्री-पुरुष असमानता, जातिगत भेदभाव, अस्पृश्यता, हिंसा, सामाजिक बहिष्कार या किसी वर्ग के प्रति घृणा को उचित ठहराने का प्रयास किया जाता है। आधुनिक लोकतांत्रिक समाज की बुनियाद समानता, स्वतंत्रता, गरिमा और न्याय पर है। इसलिए कोई भी व्याख्या यदि मनुष्य की गरिमा को कम करती है तो उस पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

यहाँ संविधान की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में अलग-अलग धर्म, संप्रदाय, भाषाएँ और परंपराएँ साथ-साथ रहती हैं। हमारा सामाजिक जीवन किसी एक धार्मिक ग्रंथ के आधार पर नहीं, बल्कि संविधान द्वारा निर्धारित नागरिक अधिकारों और कर्तव्यों के आधार पर संचालित होता है। प्रत्येक नागरिक को अपनी धार्मिक आस्था का अधिकार है, लेकिन साथ ही दूसरे व्यक्ति की स्वतंत्रता और समानता का सम्मान करना भी आवश्यक है।

इसलिए धार्मिक स्वतंत्रता और आलोचनात्मक चिंतन के बीच संतुलन बनाना जरूरी है। किसी को अपनी आस्था रखने से रोका नहीं जाना चाहिए और किसी को अपनी आस्था के नाम पर दूसरे के अधिकारों का उल्लंघन करने की अनुमति भी नहीं दी जा सकती। एक और चुनौती है—धार्मिक ग्रंथों की मनमानी व्याख्या। कई बार मूल पुस्तक से अधिक प्रभाव उसकी व्याख्या करने वालों का होता है। एक ही कथन की अलग-अलग विद्वान अलग व्याख्या करते हैं। कोई उसे प्रतीकात्मक मानता है, कोई ऐतिहासिक, कोई आध्यात्मिक और कोई शाब्दिक। ऐसे में यह कहना कि केवल एक व्याख्या ही अंतिम सत्य है, बौद्धिक रूप से उचित नहीं कहा जा सकता।

समाज में धार्मिक शिक्षा का उद्देश्य भी केवल यह नहीं होना चाहिए कि व्यक्ति क्या माने, बल्कि यह भी होना चाहिए कि वह क्यों माने। यदि बच्चे प्रश्न पूछेंगे तो उनकी आस्था समाप्त नहीं होगी; बल्कि संभव है कि उनकी समझ अधिक गहरी हो जाए। जिस विश्वास को प्रश्नों से डर लगता है, वह विश्वास कमजोर हो सकता है; लेकिन जो विश्वास प्रश्नों का सामना कर सकता है, वह अधिक परिपक्व और मजबूत बनता है।

आज डिजिटल युग में यह विषय और भी महत्वपूर्ण हो गया है। सोशल मीडिया पर धार्मिक पुस्तकों के नाम पर आधे-अधूरे उद्धरण, गलत अनुवाद और संदर्भ से काटे गए कथन तेजी से फैलते हैं। लोग कई बार मूल ग्रंथ देखे बिना ही किसी वायरल पोस्ट को सत्य मान लेते हैं। इससे धार्मिक विवाद पैदा होते हैं और सामाजिक तनाव बढ़ता है। इसलिए किसी कथन पर आपत्ति करने से पहले यह देखना आवश्यक है कि वह वास्तव में मूल ग्रंथ में है भी या नहीं, उसका सही अनुवाद क्या है और उसके आगे-पीछे का संदर्भ क्या है। आलोचना करने वाले व्यक्ति की भी जिम्मेदारी है। यदि वह किसी धार्मिक पुस्तक के किसी कथन पर सवाल उठा रहा है तो उसे प्रमाण, संदर्भ और तर्क के साथ बात रखनी चाहिए। जानबूझकर गलत उद्धरण देना, किसी धर्म के अनुयायियों को अपमानित करना या धार्मिक भावनाओं को भड़काना आलोचनात्मक चिंतन नहीं है। वह केवल विवाद पैदा करना है।

इसी प्रकार धार्मिक विद्वानों की भी जिम्मेदारी है कि वे आलोचना को शत्रुता न समझें। समाज बदलता है, भाषा बदलती है और प्रश्न भी बदलते हैं। यदि कोई पुरानी व्याख्या आज के संदर्भ में समस्या पैदा करती है तो उस पर पुनर्विचार करना धर्म की कमजोरी नहीं, बल्कि उसकी जीवंतता का संकेत हो सकता है।

धार्मिक परंपराओं में स्वयं आत्ममंथन की लंबी परंपरा रही है। संतों, दार्शनिकों और सुधारकों ने समय-समय पर रूढ़ियों पर प्रश्न उठाए। उन्होंने समाज को यह समझाने का प्रयास किया कि धर्म का मूल उद्देश्य मनुष्य को जोड़ना, नैतिक बनाना और उसके भीतर करुणा पैदा करना है, न कि मनुष्य को मनुष्य से अलग करना। इस संदर्भ में हमें एक व्यापक सिद्धांत अपनाना चाहिए—जो बात मानवता, करुणा, सत्य, न्याय और समानता को मजबूत करती है, उसे स्वीकार करने में संकोच नहीं होना चाहिए; और जो बात इन मूल्यों के विपरीत दिखाई दे, उस पर प्रश्न उठाने से डरना भी नहीं चाहिए।

यह दृष्टिकोण किसी एक धर्म तक सीमित नहीं होना चाहिए। यदि हम किसी एक धार्मिक परंपरा की पुस्तकों में लिखी बातों पर सवाल उठाने को स्वतंत्रता मानते हैं, तो यही स्वतंत्रता दूसरी धार्मिक परंपराओं के मामले में भी लागू होनी चाहिए। चयनात्मक आलोचना निष्पक्षता नहीं है। वास्तविक बौद्धिक स्वतंत्रता का अर्थ है कि सभी विचारों को समान तर्क की कसौटी पर परखा जाए।

यह भी समझना होगा कि धार्मिक पुस्तकें केवल ऐतिहासिक दस्तावेज नहीं हैं। वे करोड़ों लोगों की भावनाओं से जुड़ी हैं। इसलिए उनके बारे में बात करते समय भाषा में संयम आवश्यक है। कठोर प्रश्न पूछे जा सकते हैं, लेकिन अपमानजनक शब्दों के बिना। किसी विचार से असहमति जताई जा सकती है, लेकिन उसके अनुयायी को नीचा दिखाए बिना। यही सभ्य संवाद की पहचान है।

आज भारत को ऐसे संवाद की विशेष आवश्यकता है। एक ओर धार्मिक आस्था समाज के बड़े हिस्से के जीवन का आधार है और दूसरी ओर वैज्ञानिक सोच, संवैधानिक मूल्यों और आधुनिक शिक्षा का विस्तार हो रहा है। इन दोनों को टकराव की स्थिति में खड़ा करने के बजाय संवाद का पुल बनाना होगा।

स्कूलों और विश्वविद्यालयों में भी धार्मिक साहित्य का अध्ययन यदि किया जाए तो उसे केवल आस्था के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि इतिहास, समाजशास्त्र, दर्शन, साहित्य और तुलनात्मक अध्ययन के रूप में समझाया जा सकता है। इससे विद्यार्थी विभिन्न परंपराओं को समझेंगे और उनमें सहिष्णुता तथा विवेक दोनों विकसित होंगे। धार्मिक विविधता को समझना किसी धर्म को स्वीकार करना नहीं है; यह समाज को समझने का माध्यम है। अंततः प्रश्न यह नहीं है कि धार्मिक पुस्तकों में सब कुछ सही है या सब कुछ गलत। ऐसी सामान्यीकृत धारणा दोनों ही अतियों में ले जाती है। वास्तविक आवश्यकता यह है कि हम हर कथन को उसके संदर्भ, उद्देश्य, भाषा और सामाजिक प्रभाव के साथ समझें। जो बातें कालातीत नैतिक मूल्यों को मजबूत करती हैं, उनसे प्रेरणा लें; जो बातें प्रतीकात्मक हैं, उन्हें प्रतीक के रूप में समझें; और जो व्याख्याएँ आधुनिक मानव गरिमा से टकराती हैं, उन पर तार्किक एवं शांतिपूर्ण बहस करें।

आस्था को सम्मान देना चाहिए, लेकिन आस्था के नाम पर विवेक को बंद नहीं किया जा सकता। प्रश्न पूछना अपमान नहीं है। असहमति विद्रोह नहीं है। आलोचना शत्रुता नहीं है। और किसी विचार पर पुनर्विचार करना अपनी संस्कृति से विश्वासघात नहीं है। धर्म यदि मनुष्य को बेहतर मनुष्य बनाता है तो उसे प्रश्नों से डरने की आवश्यकता नहीं। सच्ची आस्था तर्कपूर्ण संवाद से कमजोर नहीं, बल्कि अधिक परिपक्व होती है। इसलिए आज आवश्यकता किसी धर्म को कटघरे में खड़ा करने की नहीं, बल्कि हर विचार को विवेक, मानवता, संविधान और सत्य की कसौटी पर परखने की है।

आखिरकार पुस्तकें मनुष्य के लिए हैं, मनुष्य पुस्तक के लिए नहीं। शब्दों का उद्देश्य जीवन को बेहतर बनाना है। यदि किसी शब्द की व्याख्या मनुष्य के बीच नफरत, भेदभाव या अन्याय पैदा कर रही है, तो उस व्याख्या पर प्रश्न उठाना समाज का अधिकार ही नहीं, उसकी जिम्मेदारी भी है। आस्था रहे, श्रद्धा रहे, पर विवेक भी जीवित रहे—क्योंकि प्रश्नों से भागने वाला समाज परंपरा तो बचा सकता है, लेकिन प्रगति नहीं।

नागरिकों पर ही है शहर साफ रखने की जिम्मेदारी

विनीत नारायण

सिर्फ सरकार को कोसना काफी नहीं। हमें खुद को भी आईना दिखाना होगा। अवैध निर्माण, मानकों से ज्यादा मंजिलें, नालियों में कचरा फेंकना, ये सब हम खुद करते हैं। ग्रामीण जीवन में जो सामूहिक जिम्मेदारी की भावना थी, शहर आकर हम भूल गए। कहने को शहरी हैं, लेकिन व्यवहार जंगली जैसा। बरसात शुरू होते ही शहरों की गलियों-मोहल्लों में पानी जमा होना शुरू हो जाता है। मौसम विभाग अगर सही अनुमान लगाता है तो मूसलाधार बारिश के अनुमान के बावजूद देश के हर शहर में बरसात के गंदे पानी के तालाबों के बीच नारकीय जिंदगी जीने को मजबूर क्यों हो जाते हैं? हर साल यही कहानी दोहराई जाती है। लेकिन इसकी जिम्मेदारी क्या केवल सरकार की है? क्या नागरिकों की कोई जिम्मेदारी नहीं? क्या कारण हैं कि हर साल मानसून में देश के कई शहर नदी नालों में तब्दील हो जाते हैं?

सरकार की बात करें तो इसके तीन बड़े कारण हैं। पहला, बिना योजना के बसी कॉलोनियाँ और प्रशासन की आँख मूँदकर दी गई अनुमति। सड़क, नाली, सीवरज कुछ भी सही न हो तो भी कॉलोनी पास। दूसरा, नालियों और सीवर में ठोस कचरा जमा होना, क्योंकि स्थानीय निकाय अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाते। तीसरा और सबसे खतरनाक, हर दो-तीन साल में सड़कों की ऊँचाई बढ़ा देना। जिससे आसपास के मकानों का तल हमेशा नीचे होता जाता है और पानी भराव की मुख्य वजह बन जाता है।

पहले दो कारणों पर तो हर साल मीडिया में शोर मचता रहता है। लेकिन सड़क का बार-बार ऊँचा होना कोई नहीं पूछता। क्यों? क्योंकि जितनी मोटी सड़क बिछाई जाएगी, ठेकेदार और इंजीनियरों का मुनाफा उतना ही बढ़ेगा। पहली बार अच्छी गुणवत्ता की सड़क बना दी जाए तो बार-बार बनाने की जरूरत ही न पड़े। थोड़े-बहुत पैचवर्क से काम चल सकता है, वहाँ भी पूरी नई सड़क डाल दी जाती है। बिना इस बात का लिहाज किए कि सड़क के दोनों तरफ रहने वाले आम लोगों की इतनी हैसियत नहीं होती कि वे हर दो साल में अपने घर का फर्श ऊँचा करा लें।

यदि विदेशों से तुलना की जाए तो एक बार भी ऐसा नहीं देखा कि विदेशों की किसी कॉलोनी की सड़क अचानक ऊँची हो गई हो या किसी मकान का फर्श सड़क से नीचे हो गया हो। सौ साल पुराने मकानों में भी यह समस्या नहीं है। न सड़क का स्तर बढ़ा, न घर का फर्श नीचा हुआ। तो हमारे इंजीनियरों की अक्ल पर क्या पत्थर पड़ गए हैं? या समझते तो हैं, लेकिन रिश्वत की हवस में करोड़ों लोगों की जिंदगी में हर दो-चार साल मुसीबत खड़ी कर देते हैं। लेकिन सिर्फ सरकार को कोसना काफी नहीं। हमें खुद को भी आईना दिखाना होगा। अवैध निर्माण, मानकों से ज्यादा मंजिलें, नालियों में कचरा फेंकना, ये सब हम खुद करते हैं। ग्रामीण जीवन में जो सामूहिक जिम्मेदारी की भावना थी, शहर आकर हम भूल गए। कहने को शहरी हैं, लेकिन व्यवहार जंगली जैसा।

आजकल सोशल मीडिया पर कुछ रील्स वायरल हो रही हैं। उनमें आम नागरिक दिखते हैं जो हाथ में फावड़ा-झाड़ू लेकर सड़क पर खड़े हैं। ये लोग जल भराव वाली सड़कों पर नालियों से प्लास्टिक, पॉलीथीन, गंदगी निकालते हुए देखें जाते हैं। कोई सरकारी विभाग का इंतजार नहीं कर रहा। खुद अपना इलाका साफ कर रहे हैं ताकि बारिश का पानी रुक न जाए। ये छोटी-छोटी कोशिशें ही असल बदलाव ला सकती हैं। जरूरत है तो संगठित होने की। हम संबंधित अधिकारियों से सवाल पूछें। उनसे पूछें कि सड़क का स्तर हर दो साल में क्यों बढ़ाया जाता है। और अगर वे जवाब न दे पाएँ तो दबाव बनाएँ कि सड़क को उसके मूल स्तर पर लाया जाए। आज जरूरत है कि हम उन वायरल रील्स वाले नागरिकों से सीखें। जरूरत पड ? पर खुद निकलकर नालियाँ साफ करें, कचरा न फेंकें, और साथ मिलकर प्रशासन पर दबाव बनाएँ। समस्या तभी घटेगी, जब हम अपनी उदासीनता छोड़कर खुद आगे बढ़ेंगे।

सोचिए, अगर हर मोहल्ले में सिर्फ दस-बारह लोग नियमित रूप से नालियों की सफाई करें या सरकारी विभाग पर साफ-सफाई का दबाव बनाएं तो क्या होगा? पानी का बहाव खुला रहेगा, मच्छर कम पैदा होंगे, बीमारियाँ घटेंगी और सबसे बड़ा फायदा, घरों में पानी घुसने का खतरा काफी हद तक कम हो जाएगा। वायरल रील्स में जो लोग दिख रहे हैं, वे कोई सुपरहीरो नहीं हैं। वे सामान्य नौकरीपेशा, दुकानदार, छात्र हैं। उन्होंने सिर्फ यह तय किया कि इंतजार करने से बेहतर है खुद काम करना। यही रवैया हमें अपनाना होगा। एक और महत्वपूर्ण बात। सड़क की ऊँचाई बढ़ाने की समस्या सिर्फ पानी भराव तक सीमित नहीं है। जब सड़क ऊँची हो जाती है तो घर के दरवाजे-खिड़कियाँ सड़क के स्तर से नीचे आ जाते हैं। इससे घर में नमी बढ़ती है, दीवारें गीली रहती हैं, बिजली के तार खतरे में पड़ जाते हैं और बच्चों-बुजुर्गों के लिए घर से निकलना भी मुश्किल हो जाता है। कई परिवारों को मजबूरन घर का फर्श ऊँचा करवाना पड़ता है, जिसमें लाखों रुपये खर्च हो जाते हैं। यह खर्च आम आदमी की जेब पर भारी पड़ता है, जबकि जिम्मेदार ठेकेदार और अधिकारी मजे से मुनाफा कमाते रहते हैं।

सोशल मीडिया आज सबसे ताकतवर हथियार है। अपने इलाके की सड़क की ऊँचाई का फोटो-वीडियो लें, पुराने और नए स्तर की तुलना दिखाएँ, और पोस्ट करें। स्थानीय विधायक, पार्षद और नगर निगम के अधिकारियों को टैग करें। जब सैकड़ों लोग एक साथ आवाज उठाएँगे तो प्रशासन को जवाब देना ही पड़ेगा। साथ ही, मोहल्ला स्तर पर सफाई अभियान शुरू करें। रविवार की सुबह दो घंटे निकालकर नालियाँ साफ करना कोई बड़ी बात नहीं। यह छोटी सी मेहनत साल भर की परेशानी बचा सकती है। याद रखें, सरकार और प्रशासन तभी जागते हैं जब नागरिक जाग जाते हैं। अगर हम सिर्फ कोसते रहे और खुद कुछ न किया, तो अगले साल फिर वही पानी, वही गंदगी और वही शिकायतें होंगी। लेकिन अगर हमने उन वायरल रील्स वाले नागरिकों की तरह जिम्मेदारी संभाली, तो बदलाव जरूर आएगा। नाली साफ करना शर्म की बात नहीं, बल्कि गर्व की बात है। क्योंकि यही असली देशभक्ति है, अपने आसपास को साफ और सुरक्षित रखना। समय आ गया है कि हम सिर्फ शिकायत न करें, बल्कि समाधान का हिस्सा बनें।

फुटपाथ पर दुकान, सड़क पर आदमी — फिर भी शहर स्मार्ट है!

प्रो. आरके जैन

किसी शहर की पहचान चौड़ी सड़कों और तेज वाहनों से नहीं, आम आदमी के आसान पैदल चलने से होती है। सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद दिल्ली मास्टर प्लान-2047 में ह्वराइट टू वॉकह्ल का प्रस्ताव इसी अधिकार को केंद्र में लाता है। यह केवल फुटपाथ सुधार की योजना नहीं, बल्कि सड़क पर बढ़ते वाहन वर्चस्व को चुनौती है। सुरक्षित, निर्बाध, छायादार और सर्वसुलभ पैदल मार्गों का सिटीवाइड नेटवर्क, पैदल-केवल सड़कें, मल्टी-यूटिलिटी जोन और एक्टिव ट्रैवल एरिया इसकी प्रमुख कड़ियां हैं। व्यस्त बाजारों, धरोहर क्षेत्रों और चौबीस घंटे सक्रिय इलाकों को प्राथमिकता देकर पैदल यात्रियों को शहर की योजना के केंद्र में रखा गया है। यमुना और नालों के किनारे ग्रीनवे तथा पेलिकन क्रॉसिंग नेटवर्क को और सुरक्षित बनाएंगे। दिल्ली में यह पहल सफल होती है तो इसे राजधानी तक सीमित न रखकर देश के हर शहर की शहरी नीति में पैदल अधिकार को अनिवार्य जगह देनी चाहिए।

शहर की तरक्की का सबसे कमजोर सबूत उसका वह फुटपाथ है, जिस पर आदमी चल ही न सके। देश के अधिकांश शहरों में फुटपाथ हैं, लेकिन वे पैदल यात्री के हिस्से में नहीं आते। कहीं कारें उन पर खड़ी हैं, कहीं दुकानें और खोमचे फैल गए हैं, तो कहीं बिजली के खंभे और निर्माण सामग्री रास्ता रोकते हैं। बची-खुची जगह भी टूटी, ऊबड़-खाबड़ या बीच में खत्म हो जाती है, इसलिए पैदल यात्री को सड़क पर उतरना पड़ता है। बच्चों, बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए यह असुविधा नहीं, रोज का खतरा है। दिल्ली में औसत पैदल ट्रिप केवल 1.6 किलोमीटर है, जबकि गैर-मोटर चालित यात्राएं कुल यात्राओं का 42 प्रतिशत हैं। संदेश साफ है—लोग चलना चाहते हैं, शहर ने उनके कदमों की जगह छीन ली है। इसलिए राइट टू वॉक केवल दिल्ली का मुद्दा नहीं, हर भारतीय शहर की अनिवार्य शहरी नीति बननी चाहिए।

पैदल रास्ता केवल दो कदमों के बीच की खाली जगह नहीं, शहर के सार्वजनिक जीवन की पहली चौखट है। उसे सिर्फ सीमेंट की पट्टी मानना शहर को आधा देखना है। मल्टी-यूटिलिटी जोन इसी सोच को बदलने का रास्ता है। बैठने की जगह, पेयजल, शौचालय, बच्चों की देखभाल कक्ष, स्ट्रीट वेंडरों के लिए तय स्थान और साइकिल शेयरिंग जैसी सुविधाएं फुटपाथ को चलने की जगह से आगे बढ़ाकर जीवंत सार्वजनिक क्षेत्र बना सकती हैं। सार्वजनिक परिवहन से इसका सीधा जुड़ाव अंतिम मील की परेशानी भी घटाएगा। दिल्ली का यह मॉडल लखनऊ, भोपाल, जयपुर, इंदौर, पटना, पुणे, मुंबई, बेंगलुरु, हैदराबाद ही नहीं, छोटे कस्बों तक पहुंचना चाहिए। हर शहर अपनी जलवायु, भूगोल और जरूरत के हिसाब से रूप बदले, लेकिन नियम एक रहे—सड़क बनाते समय पैदल आदमी को सबसे आखिर में नहीं, सबसे पहले जगह मिले।

कागज पर योजना एक होती है, लेकिन जमीन पर उसके कई मालिक निकल आते हैं—यही पैदल रास्तों की सबसे बड़ी विडंबना है। दिल्ली में डीडीए, पीडब्ल्यूडी, एमसीडी और यातायात पुलिस जैसी कई एजेंसियां सड़क व्यवस्था से जुड़ी हैं। दूसरे शहरों में भी नगर निकाय, विकास प्राधिकरण, लोक निर्माण विभाग और यातायात तंत्र की बंटी जिम्मेदारियां पैदल मार्ग को बे-सहारा छोड़ देती हैं। अतिक्रमण हटाने की मुहिम चलती है, तस्वीरें छपती हैं, रास्ता खुलता है और कुछ ही समय बाद कब्जे फिर लौट आते हैं। इसलिए राष्ट्रीय स्तर पर राइट टू वॉक के स्पष्ट मानक, एकल जवाबदेही, अलग बजट, कड़ा जुमार्ना और लगातार निगरानी जरूरी है। फुटपाथ बनाकर जिम्मेदारी खत्म नहीं होती; उसे बचाए रखना ही असली जिम्मेदारी है।

फुटपाथ की असली परीक्षा वहां शुरू होती है, जहां उसे सड़क पार करानी होती है। सुरक्षित क्रॉसिंग के बिना चौड़ा और सुंदर फुटपाथ भी पैदल यात्री को बीच रास्ते असहाय छोड़ देता है। इसलिए हर शहर में पर्याप्त चौड़ाई, सार्वभौमिक पहुंच, छायादार पेड़, रोशनी और सुरक्षित क्रॉसिंग अनिवार्य हों। पेलिकन क्रॉसिंग जैसे उपाय व्यस्त सड़कों पर पैदल यात्रियों को भरोसा दे सकते हैं। टैक्टिकल अर्बनिज्म के जरिए बाजारों और चुनिंदा इलाकों में अस्थायी पैदल क्षेत्र बनाकर यह परखा जा सकता है कि कम वाहन और ज्यादा पैदल लोगों वाला शहर कैसा दिखता है। दिल्ली के 24 प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में वॉक प्लान इस बदलाव की प्रयोगशाला बन सकती हैं। सफल प्रयोगों को दूसरे इलाकों और फिर दूसरे शहरों तक ले जाना चाहिए। योजना की सफलता किलोमीटर से नहीं, सुरक्षित पहुंचे कदमों से मापी जानी चाहिए।

जब सड़कें कारों के लिए फैलती हैं, तो इंसान के हिस्से की जगह और हवा सिकुड़ती है। कार-केंद्रित विकास की कीमत सिर्फ जाम नहीं, प्रदूषण, खराब स्वास्थ्य और बढ़ती असमानता भी है। सुरक्षित फुटपाथ हों तो छोटी दूरी के लिए पैदल चलना और साइकिल अपनाना आसान होगा। निजी वाहनों और ईंधन पर निर्भरता घटेगी, प्रदूषण कम होगा। बुजुर्ग अपने दम पर निकल सकेंगे, बच्चे सुरक्षित स्कूल जा सकेंगे और दिव्यांग नागरिक अधिकार के साथ चल सकेंगे। इसलिए हर शहर की विकास योजना में पैदल नेटवर्क को फ्लाईओवर, एक्सप्रेसवे और पार्किंग जितनी प्राथमिकता मिलनी चाहिए। जो शहर अपने लोगों के कदम रोकता है, उसकी रफ्तार चाहे जितनी हो, वह मानवीय नहीं हो सकता।

किसी योजना की असली ताकत उसके नक्शे में नहीं, उसके पीछे खड़ी नीयत में होती है। नागरिकों को वॉक प्लान में शामिल किया जाए, स्थानीय समुदाय निगरानी करें और रखरखाव के लिए अलग बजट तय हो। फुटपाथ दिन-रात साफ, रोशन, सुरक्षित और बाधारहित रहें, तभी ह्वराइट टू वॉकह्ल अधिकार बनेगा, नारा नहीं। दिल्ली मास्टर प्लान-2047 ने रास्ता दिखाया है, लेकिन इसे राजधानी तक सीमित रखना बड़ी भूल होगी। देश के हर शहर की नई योजना में ह्वसिटीवाइड वॉक नेटवर्कह्ल अनिवार्य शहरी ढांचे का हिस्सा होना चाहिए। विकास ऊंची इमारतों और चौड़ी सड़कों का नाम नहीं; विकास तब है जब सबसे कमजोर नागरिक भी बिना डर और बिना किसी से रास्ता मांगे चल सके। शहर वाहनों से नहीं, इंसानों के बेखौफ कदमों से जीवंत होता है।

संत रविदास जयंती पर रिसाली मंडल में निकली भव्य कलश वंदन यात्रा, विधायक चंद्रकार हुए शामिल

रिसाली के चार वार्डों में होगा दो करोड़ पचपन लाख पच्चीस हजार के विकास कार्य

नई दृष्टिबिंदु / रिसाली-भिलाई

संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज जी की 650वीं जयंती के उपलक्ष्य में भारतीय जनता पार्टी रिसाली मंडल द्वारा गुरुवार को भव्य कलश वंदन यात्रा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ श्याम नगर, अवधपुरी, रिसाली के वार्ड क्रमांक 26 में दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चंद्राकर ने विधिवत कलश की पूजा-अर्चना कर किया। कलश वंदन यात्रा में बड़ी संख्या में मातृशक्ति एवं श्रद्धालु शामिल हुए। माताओं-बहनों ने सिर पर कलश धारण कर नगर भ्रमण किया। यात्रा के दौरान विभिन्न स्थानों पर श्रद्धालुओं द्वारा कलश की पूजा-अर्चना की गई। भक्ति और श्रद्धा से सराबोर यात्रा में बड़ी संख्या में भाजपा कार्यकर्ताओं एवं स्थानीय नागरिकों की सहभागिता रही।

इस अवसर पर विधायक ललित चंद्राकर ने कहा कि संत शिरोमणि गुरु रविदास जी ने अपना संपूर्ण जीवन समाज में सामंजस्य, समानता, समरसता और भाईचारे का संदेश देने के लिए समर्पित किया। उनका प्रसिद्ध संदेश ह्मन चंगा तो कठौती में गंगाह्व आज भी समाज को सकारात्मक जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

उन्होंने कहा कि भाजपा कार्यकताओं ने संकल्प लिया है कि गुरु रविदास जी के विचारों और उनके सामाजिक समरसता के संदेश को घर-घर तक पहुंचाया जाएगा, ताकि समाज में एकता और भाईचारे की भावना और मजबूत हो। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र तथा प्रदेश की भाजपा सरकारें अंत्योदय के सिद्धांत पर कार्य करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास और जनकल्याण की योजनाओं का लाभ पहुंचाने का प्रयास कर रही हैं।

कार्यक्रम में रिसाली मंडल अध्यक्ष अनुपम साहू, जिला उपाध्यक्ष शिवेन्द्र परिहार एवं मनोज सोनी, महामंत्री गुड्डू झा एवं दशरथ साहू, नेता प्रतिपक्ष शैलेन्द्र साहू, महिला मोर्चा अध्यक्ष शकुंतला दास, पार्षद रमा साहू, सारिका साहू, धनेश्वरी ढलेंद्र, संध्या साहू, संस्कृति वर्मा, ओमकेश्वरी मार्कण्डेय, अनुपमा गोस्वामी, तेजस्वनी सोनवानी, डॉ. पार्वती कुर्रे, मोंगरा देशमुख, विकास कुलश्रेष्ठ, कमलेश हिरवानी, राजेन्द्र यादव सहित पार्षदगण, मंडल पदाधिकारी, भाजपा कार्यकर्ता एवं बड़ी संख्या में मातृशक्ति उपस्थित रही।

विधायक ललित चंद्राकर ने किया भूमिपूजन

रिसाली निगम क्षेत्र के मैत्रीनगर, शक्ति विहार, लक्ष्मी नगर और इस्पात नगर वार्ड में दो करोड़ पचपन लाख पच्चीस हजार की राशि से सड़क, नाली, सड़क चैड़ीकरण, सामुदायिक भवन, सौंदर्यीकरण और उद्यान संधारण के कार्य किए जाएंगे। शुक्रवार को दुर्ग ग्रामीण विधायक वार्डों तक पहुंचे और विकास कार्यों की नींव रखी। उन्होंने रिसाली निगम क्षेत्र में होने वाले विकास कार्यों को आम जनता को समर्पित किया।

इस अवसर पर दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर ने नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि लोकतंत्र में जनता सर्वपरि है। उन्होंने चुनावी दौरे का हवाला देते हुए कहा कि उन्हें क्षेत्र के मतदाताओं ने जिताया है। जबसे वें विधायक बने है लगातार विकास कार्यों की भूमिपूजन प्राथमिकता के आधार मे कर रहे है। उन्होंने नागरिकों को आश्वस्त किया कि निर्माण कार्य पूर्ण होने के बाद वें जल्द ही लोकार्पण करने भी आएंगे। उन्होंने पूरे 40 वार्डों में बिना भेदभाव के स्वीकृत कार्यो को पूरा कराने पर जोर दिया। इस अवसर पर नेता प्रतिपक्ष शैलेन्द्र साहू, पार्षद सुनंदा चंद्राकर, डॉ. सीमा साहू, अनूप डे, विलास राव बोरकर, धर्मेन्द्र भगत, गजेन्द्री कोठारी, ममता सिन्हा, मनीष यादव, शीला नारखेड़े, सविता दवस, रमा साहू, ईश्वरी साहू, सरिता देवांगन समेत मंडल अध्यक्ष अनुपम साहू, राजू जंघेल आदि उपस्थित थे।

इन वार्डों में होगा विकास कार्य

रिसाली निगम क्षेत्र के वार्डे क्र. 27 मैत्रीनगर में 44 लाख 9 हजार से नाली, पाँथवे निर्माण, गार्डन निर्माण, सौंदर्यीकरण और पेवर ब्लॉक लगाने का कार्य होगा। इसी तरह वार्ड 28 शक्ति विहार में डोम शेड, नाली, पेवर ब्लॉक, पुलिया निर्माण, सड़क संधारण, उद्यान नवीनीकरण, नाली निर्माण आदि कार्य 01 करोड़ 08 लाख 89 हजार, वार्ड 29 लक्ष्मी नगर में 62 लाख 14 हजार और वार्ड 30 इस्पात नगर में 39 लाख 32 हजार से विकास कार्य होंगे। इस्पात नगर वार्ड पार्षद अनुप डे ने दुर्ग ग्रामीण विधायक ललित चंद्राकर को विकास कार्य की सौगात देने के लिए आभार व्यक्त किया। पार्षद ने भूमिपूजन कार्यक्रम में विधायक का नागरिकों की ओर से अभिनंदन किया।

खास खबर

फर्जी ट्रांसफर आदेश कांड : डॉक्टर समेत तीन पर FIR, भाजपा जिला महामंत्री गिरफ्तार

नई दृष्टिबिंदु / बलौदाबाजार

स्वास्थ्य विभाग में फर्जी ट्रांसफर आदेश तैयार कर पेश करने के सनसनीखेज मामले में पलारी पुलिस ने डॉक्टर समेत तीन लोगों के खिलाफ FIR दर्ज की है। इस मामले में भाजपा जिला महामंत्री कृष्णा अवस्थी को गिरफ्तार किया गया है, वहीं भाजपा संगठन ने उन्हें पार्टी से निष्कासित कर दिया है।

जानकारी के अनुसार रोहांशी PHC में पदस्थ डॉ. करण कुमार देवांगन का रोहांशी से मोपर PHC भाटापारा स्थानांतरण का आदेश विभाग में प्रस्तुत किया गया था। आदेश पर CMHO के फर्जी हस्ताक्षर पाए गए। विभागीय जांच में आदेश फर्जी मिलने पर स्वास्थ्य विभाग ने पुलिस में शिकायत की। शिकायत पर पलारी थाने में BNS की धारा 3(5), 318(4), 336(3), 337, 338 और 340(2) के तहत मामला दर्ज किया गया। जांच में भाजपा नेता कृष्णा अवस्थी की भूमिका सामने आई। आरोप है कि डॉक्टर के साथ मिलकर पैसे लेकर फर्जी आदेश तैयार कराया गया था। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष किरण सिंह देव के निर्देश पर कृष्णा अवस्थी को पार्टी से बाहर का रास्ता दिखा दिया गया है। पुलिस फर्जी दस्तावेज और लेन-देन के पहलुओं की जांच कर रही है।

सूखे नशे के खिलाफ दुर्ग पुलिस की कार्रवाई : 14 ग्राम चिट्टे के साथ दो तस्कर गिरफ्तार

दुर्ग। सूखे नशे के अवैध कारोबार पर कार्रवाई करते हुए सिटी कोतवाली दुर्ग पुलिस ने दो युवकों को 14.370 ग्राम चिट्टा (हेरोइन) के साथ गिरफ्तार किया है। बरामद मादक पदार्थ की कीमत लगभग 1.48 लाख रुपये आंकी गई है। पुलिस को मुखबिर से सूचना मिली थी कि शासकीय जिला अस्पताल दुर्ग के आगे नल घर के पास दो व्यक्ति चिट्टा बेचने के लिए ग्राहक तलाश रहे हैं। सूचना पर पुलिस ने घेराबंदी कर दोनों को पकड़ा। आरोपियों की पहचान विकास यादव (27) निवासी सोरीक नगर, धमतरी और फयाज खोखर उर्फ सोहेल (26) निवासी लुचकीपारा, दुर्ग के रूप में हुई। तलाशी में विकास के पास से 7.370 ग्राम और फयाज के पास से 7.000 ग्राम चिट्टा बरामद हुआ। साथ ही दो मोबाइल फोन भी जब्त किए गए। कुल जब्ती 1.68 लाख रुपये की है। थाना सिटी कोतवाली में धारा 21(क) NDPS एक्ट के तहत अपराध दर्ज कर दोनों को न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है। पुलिस नेटवर्क के संबंध में पूछताछ कर रही है।

दाढ़ी नहीं बनाने पर विवाद, सैलून संचालक पर चाकू से हमला, आरोपी जेल भेजा गया

धमतरी। ग्राम करेलीबड़ी में दाढ़ी नहीं बनाने की बात को लेकर हुए विवाद में सैलून संचालक पर चाकू से हमला करने वाले आरोपी को करेलीबड़ी चौकी पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। पुलिस के अनुसार 6 अगस्त को आरोपी चम्मन लाल भारती (43) का सैलून संचालक टुकेश्वर उर्फ लालू सेन से दाढ़ी नहीं बनाने को लेकर विवाद हुआ था। विवाद बढ़ने पर आरोपी ने गाली-गलौज करते हुए सब्जी काटने वाले चाकू से हमला कर दिया, जिससे प्रार्थी के हाथ, घुटने और गाल में चोट आई। रिपोर्ट पर चौकी करेलीबड़ी थाना मगरलोड में अपराध क्रमांक 134/2026 धारा 296, 115(2), 118(1) इंटर के तहत मामला दर्ज किया गया। पुलिस अधीक्षक भावना पांडेय के निर्देश पर आरोपी को गिरफ्तार कर उसकी निशानदेही पर कृषि मंडी की दीवार के पास से घटना में प्रयुक्त चाकू जब्त किया गया। आरोपी को न्यायालय में पेश कर न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है।

सावन मेले का भव्य शुभारंभ, कौशल्या साय व डॉ. सरोज पाण्डेय ने लिया झूले का आनंद

महापौर सहित निगम की व्यवस्थाओं की सराहना, महिलाओं ने खेलों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में लिया हिस्सा

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग

नगर पालिक निगम दुर्ग द्वारा आयोजित दो दिवसीय रिमझिम सावन मेला-2026 का शुभारंभ शुक्रवार को विवेकानंद सभागार में भव्य एवं रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ हुआ। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी साय, विशिष्ट अतिथि पूर्व भाजपा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. सरोज पाण्डेय तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने दीप प्रज्वलित कर मेले का शुभारंभ किया।

इस अवसर पर निगम की एमआईसी सदस्यों एवं पार्षदगणों ने श्रीमती कौशल्या देवी साय एवं डॉ. सरोज पाण्डेय का गरिमामय स्वागत किया। कार्यक्रम के दौरान श्रीमती कौशल्या देवी साय, डॉ. सरोज पाण्डेय एवं महापौर अलका बाघमार ने सावन झूले का आनंद लिया। मेले में महिलाओं के लिए विभिन्न मनोरंजक खेल, प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक प्रस्तुतियां तथा विभिन्न स्टॉल लगाए गए हैं, जिनका शहरवासियों ने उत्साहपूर्वक आनंद लिया।

सावन मेला संस्कृति और परंपरा का जीवंत उत्सव : कौशल्या देवी साय

मुख्यमंत्री की धर्मपत्नी श्रीमती कौशल्या देवी साय ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार प्रदेश की कला, संस्कृति एवं परंपराओं को सहेजने तथा उन्हें नई पीढ़ी तक पहुंचाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही है। सावन उत्सव हमारी संस्कृति और सभ्यता की खूबसूरत पहचान है। दुर्ग का रिमझिम सावन मेला हर वर्ष नई उम्मीद और नई ऊर्जा लेकर आता है तथा मनोरंजन, संस्कृति और सामाजिक एकता का सुंदर संगम बन चुका है।

उन्होंने कहा कि इस मेले ने दुर्ग शहर की सांस्कृतिक पहचान को नया आयाम दिया है। नागरिकों की उत्साहपूर्ण भागीदारी इसकी सफलता का सबसे बड़ा प्रमाण है। उन्होंने महापौर अलका बाघमार सहित नगर निगम की पूरी टीम को सफल आयोजन के लिए बधाई देते हुए कहा कि ऐसे आयोजन निरंतर होते रहने चाहिए, ताकि हमारी लोक संस्कृति और परंपराएं सदैव जीवंत रहें।

दुर्ग की आत्मा और लोकसंस्कृति का जीवंत प्रमाण है सावन मेला : डॉ. सरोज पाण्डेय

डॉ. सरोज पाण्डेय ने कहा कि सावन मेला केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि दुर्ग की आत्मा, संस्कृति और परंपराओं का जीवंत प्रमाण है। ऐसे आयोजन महिलाओं को अपनी प्रतिभा और रचनात्मकता प्रदर्शित करने का मंच प्रदान करते हैं। सावन मास में आयोजित यह कार्यक्रम समाज के सभी वर्गों को जोड़ने के साथ लोक संस्कृति के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने आयोजन की निरंतरता के लिए शुभकामनाएं दीं।

शहर की सांस्कृतिक पहचान बन चुका है सावन मेला : महापौर

महापौर श्रीमती अलका बाघमार ने कहा कि रिमझिम सावन मेला की सफलता में शहरवासियों, निगम के अधिकारियों-कर्मचारियों, जनप्रतिनिधियों और सभी स्टॉल संचालकों का महत्वपूर्ण योगदान है। यह मेला अब केवल एक परंपरा नहीं, बल्कि दुर्ग शहर की सांस्कृतिक पहचान और धरोहर बन चुका है। उन्होंने कहा कि अगले वर्ष इसे और अधिक व्यापक एवं भव्य स्वरूप में आयोजित किया जाएगा।

महिलाओं ने खेलों और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में दिखाई प्रतिभा

रिमझिम सावन मेले में महिलाओं ने तीज क्वीन, दौड़, कुर्सी दौड़ सहित विभिन्न मनोरंजक खेलों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। लोकगीत एवं लोकनृत्य की प्रस्तुतियों ने उपस्थित लोगों का मन मोह लिया और पूरा सभागार सावन के उल्लास से गूंज उठा।

इस अवसर पर निगम आयुक्त मोहेंद्र साहू, सभापति श्याम शर्मा, नेता प्रतिपक्ष संजय कोहले, पूर्व विधायक अरुण वोरा, एमआईसी सदस्यगण, पार्षदगण, एल्डरमेन तथा नगर निगम के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सहायक अभियंता गिरीश दीवान एवं जल कार्य निरीक्षक नारायण ठाकुर ने किया।

बड़ी बहन को विदा करने आई 3 साल की मासूम स्कूल बस के नीचे कुचली

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

बेमेतरा जिले से एक बेहद दर्दनाक हादसा सामने आया है। स्कूल बस में बड़ी बहन को विदा करने पहुंची 3 साल की मासूम बच्ची बस की चपेट में आ गई, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। घटना के बाद पूरे गांव में शोक पसर गया है।

जानकारी के अनुसार रोज की तरह दादा अपनी बड़ी पोती को स्कूल बस में बैठाने के लिए निकले थे। बड़ी बहन को बस में बैठता देख 3 साल की छोटी बहन भी पीछे-पीछे आ गई, जिसका दादा को पता नहीं चला। दादा ने बड़ी पोती को बस में बैठाया ही था कि चालक ने बस आगे बढ़ा दी। बताया जा रहा है कि चालक को बस के सामने खड़ी मासूम दिखाई नहीं दी और बस का पहिया उसके सिर के ऊपर से गुजर गया।

हादसे के बाद बच्ची को तुरंत जिला अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है और पोस्टमार्टम की प्रक्रिया जारी है। कुछ पल पहले तक जो नन्ही बच्ची बड़ी बहन को टाटा कर रही थी, वह हमेशा के लिए परिवार से बिछड़ गई। घटना के बाद परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

देवकर में आधुनिक सुविधाओं से युक्त नया सार्वजनिक शौचालय निर्माण की प्रक्रिया जारी

बेमेतरा। नगर पंचायत देवकर के वार्ड क्रमांक 14 (प्रस्तावित वार्ड 13) जामगांव रोड़ स्थित सार्वजनिक शौचालय को लेकर नगर पंचायत द्वारा आवश्यक कार्यवाही की जा रही है। लगभग 20 वर्ष पुराने 06-सीटर सार्वजनिक शौचालय का ढांचा तकनीकी रूप से जर्जर हो चुका है। इसे ध्यान में रखते हुए नगर पंचायत द्वारा पुराने ढांचे के स्थान पर आधुनिक सुविधाओं से युक्त नया सार्वजनिक शौचालय निर्माण का निर्णय लिया गया है। स्वच्छ भारत मिशन 2.0 (शहरी) के अंतर्गत पुराने शौचालय को डिस्मेंटल कर लगभग 16.90 लाख रुपये की लागत से सर्वसुविधायुक्त आकांक्षी शौचालय निर्माण का प्रस्ताव तैयार किया गया है। परियोजना के लिए क्षेत्रीय कार्यालय नगरीय प्रशासन एवं विकास, दुर्ग संभाग से 5 मार्च 2024 को तकनीकी स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। इसके पश्चात अंतिम वित्तीय स्वीकृति के लिए विस्तृत कार्ययोजना मुख्य कार्यपालन अधिकारी, राज्य शहरी विकास अभिकरण (सूडा), नवा रायपुर को प्रेषित की गई है।

तखतपुर : घोंघा नदी में बहे तीनों मासूमों के शव बरामद, समडील गांव में पसरा मातम

नई दृष्टिबिंदु / तखतपुर

तखतपुर थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत समडील में घोंघा नदी में बहे तीन मासूम बच्चों के मामले में बेहद दुखद अंत सामने आया है। एसडीआरएफ और पुलिस की टीम ने लगातार दूसरे दिन चलाए गए रेस्क्यू अभियान में तीनों बच्चों के शव बरामद कर लिए हैं।

जानकारी के अनुसार ग्राम समडील निवासी 7 वर्षीय अनमोल जायसवाल पिता भुनेश्वर जायसवाल, 9 वर्षीय स्तुति जायसवाल पिता भुनेश्वर जायसवाल और 8 वर्षीय शिक्षा जायसवाल पिता विजय जायसवाल शुक्रवार को स्कूल से छुट्टी के बाद घोंघा नदी पार कर घर लौट रहे थे। नदी में पानी कम होने के कारण बच्चे रोज की तरह पैदल पार कर रहे थे, तभी अचानक तेज बहाव आ गया और तीनों उसकी चपेट में आकर बह गए।

हादसे की सूचना पर ग्रामीण और पुलिस मौके पर पहुंचे। पहले दिन एक बच्चे का शव बरामद हुआ था। शनिवार-रविवार की दरमियानी रात पुलिस मौके पर ही डटी रही। रविवार सुबह 6 बजे से एसडीआरएफ ने फिर सर्च ऑपरेशन शुरू किया और पुल के नीचे से दूसरे और तीसरे बच्चे के शव भी बरामद कर लिए।

थाना प्रभारी अवनीश पासवान ने बताया कि तीनों शवों का पंचनामा कर पीएम के लिए भेजा गया है। तीनों शव मिलने की खबर के बाद समडील गांव में मातम पसर गया है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है। पूरे गांव में शोक की लहर है।

शिव महापुराण कथा का समापन माता कौशिल्या की जन्मभूमि और भगवान श्रीराम के ननिहाल छत्तीसगढ़ की इस्पात नगरी भिलाई में बीते सात दिनों से शिव भक्ति की अविरल धारा बह रही

छत्तीसगढ़ में भगवान महादेव की कृपा से खुशहाली और समृद्धि है - मुख्यमंत्री विष्णु देव साय

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

जयंती स्टेडियम के समीप आयोजित शिव महापुराण कथा के अंतिम दिवस मुख्यमंत्री विष्णु देव साय अपनी धर्मपत्नी कौशिल्या देवी साय के साथ कथा श्रवण करने पहुंचे। उन्होंने व्यास पीठ की पूजा-अर्चना कर प्रदेश की जनता की खुशहाली एवं समृद्धि की कामना की। इस अवसर पर विशाल जनसमूह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री साय ने कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि माता कौशिल्या की जन्मभूमि और भगवान श्रीराम के ननिहाल छत्तीसगढ़ की इस्पात नगरी भिलाई में बीते सात दिनों से शिव भक्ति की अविरल धारा बह रही है। यहां बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को अध्यात्म से जुड़ने का अवसर मिला है।

उन्होंने कहा कि भगवान भोलेनाथ प्रदेश के चारों दिशाओं में विराजमान हैं। रायपुर में हटकेश्वर महादेव, कवर्धा में भोरमदेव, राजिम में कुलेश्वर महादेव, चम्पारण में चम्पेश्वर महादेव, गरियाबंद में भूतेश्वर महादेव, सिरपुर में गंधेश्वर महादेव और जशपुर में मधेश्वर महादेव के रूप में पूजे जाते हैं। छत्तीसगढ़ के चप्पे-चप्पे पर देवाधिदेव महादेव की कृपा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रदेश सरकार ने पांच शक्तिपीठों - सूरजपुर की कुदरगढ़ी माता, चंद्रपुर की मां चंद्रहासिनी, रतनपुर की मां महामाया, डोंगरगढ़ की मां बम्लेश्वरी और दंतेवाड़ा की मां दंतेश्वरी के विकास के लिए योजना बनाई है, जिन्हें चारधाम की तर्ज पर विकसित किया जा रहा है। सरकार श्री रामलला अयोध्या धाम दर्शन योजना संचालित कर रही है, जिसके तहत अब तक 50 हजार से अधिक लोग अयोध्या दर्शन कर चुके हैं। मुख्यमंत्री तीर्थ दर्शन योजना को भी पुनः शुरू किया गया है, जिसके तहत 19 तीर्थों के दर्शन कराए जा रहे हैं।

उन्होंने कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा का प्रदेशवासियों की ओर से स्वागत किया और कहा कि वे देश-दुनिया में शिव महापुराण कथा सुनाकर सनातन धर्म को मजबूती प्रदान कर रहे हैं। भिलाई में लगातार तीसरी बार इस कथा का आयोजन हो रहा है। इस अवसर पर वैशाली नगर विधायक रिकेश सेन, संभाग आयुक्त सत्यनारायण राठौर, आईजी अभिषेक शांडिल्य, कलेक्टर अभिजीत सिंह, एसएसपी विजय अग्रवाल, आयोजन समिति के दया सिंह सहित बड़ी संख्या में शिवभक्त उपस्थित थे।

क्या अनुराग कश्यप करेंगे तीसरी शादी

अनुराग कश्यप ने साल 1997 में आरती बजाज से शादी की थी, 2009 में इनका तलाक हो गया। फिर निर्देशक ने साल 2011 में अभिनेत्री कल्कि केलकां से शादी की लेकिन साल 2015 में इनका भी तलाक हो गया। अब अनुराग एक शुभा शेट्टी नाम की लड़की के साथ रिलेशनशिप में हैं। क्या वह शुभा से तीसरी शादी करेंगे? जानिए, अनुराग ने क्या इस बारे में क्या प्रतिक्रिया दी।

शादी के सवाल पर क्या था अनुराग का जवाब?

हाल ही में जेनिस सिकेरा के यूट्यूब चैनल पर अनुराग ने अपनी जिंदगी को लेकर लंबी बातचीत की। वह इस बातचीत में अपने शादी के प्लान के बारे में कहते हैं, 'शुभा शादी में यकीन नहीं रखती हैं। मैं भी उनके साथ बहुत खुश हूं। मैं उनके साथ रहना चाहता हूं। इसके लिए जो भी करना पड़े करूंगा। जिंदगी में बहुत कुछ है। एक बूढ़े आदमी की क्या इनसिक्योरिटी हो सकती है? मैं बस इतना सेहतमंद रहना चाहता हूं कि जिन लोगों से मैं प्यार करता हूं, उनसे ज्यादा समय तक जिंदा रहूं।'

एक वक्त शुभा को खुद से दूर करना चाहते थे अनुराग

अनुराग, शुभा के बारे में भी बताते हैं। वह कहते हैं, 'हमने कई पल साथ बिताए हैं। हम कभी-कभी झिझक महसूस करते थे। मैं ज्यादा झिझकता था और सिर्फ ज्यादा झिझकता ही नहीं था, एक समय तो मैं इतना ज्यादा झिझकने लगा था कि शुभा को दूर करने की पूरी कोशिश कर रहा था। अनुराग आगे कहते हैं, 'उनके चेहरे से उनकी उम्र का पता नहीं चलता। वह आज भी वैसी ही दिखती हैं। वह अपनी उम्र की नहीं लगती हैं। तो बात यह है कि जैसे-जैसे मैं बूढ़ा होता गया और वह वैसी ही दिखती रहीं, तब मुझे थोड़ी झिझक होने लगी।' बता दें कि अनुराग कश्यप 53 साल के हैं, जबकि शुभा 32 या 33 साल की हैं।

कौन है शुभा शेट्टी?

शुभा शेट्टी की बात करें तो वह अनुराग कश्यप की प्रोडक्शन कंपनी फैंटम फिल्म्स में असिस्टेंट डायरेक्टर के तौर पर काम करती थीं। अनुराग को पहली बार 2015 में शुभा के साथ देखा गया था। 2018 के एक इंटरव्यू में ही अनुराग ने पहली बार माना था कि वह शुभा के साथ रिलेशनशिप में हैं।

सिंगर सुकृति कक्कड़ ने पांच साल तक क्यों छिपाया रिश्ता?

बताया शादी का प्लान

सिंगर सुकृति कक्कड़ ने अपने पांच साल के रिश्ते को तब तक लोगों की नजरों से दूर रखा, जब तक कि वे इसे सबके सामने लाने के लिए तैयार नहीं हो गईं। सिंगर ने इंस्टाग्राम पर मुंबई के एंटरप्रेन्योर शौमिक शेट्टी के साथ अपनी सगाई की घोषणा की। 31 जुलाई को टस्कनी में सगाई करने वाले इस कपल ने बताया कि अपने रिश्ते को प्राइवेट क्यों रखा?

बातचीत में सिंगर ने कहा कि जब हम इस रिश्ते में आए, तो हमें अपने रिश्ते पर बहुत गर्व हुआ। हमने सोचा कि जब सही समय आएगा तभी इसकी घोषणा करना सही रहेगा। सुकृति कहती हैं कि जब आप रिश्ते छिपाते हैं, तो यह आपकी पर्सनैलिटी का हिस्सा बन जाता है। हमारे परिवारों और कुछ करीबी दोस्तों को हमेशा पता था। हमें इसे प्राइवेट रखना पसंद है और यह हमेशा ऐसा ही रहेगा। इसकी बहुत अहमियत है। मैं 'नजर' में बहुत विश्वास रखती हूं।

काम पर ध्यान देना चाहती थीं अभिनेत्री

कपल ने यह भी बताया कि वे अपने रिश्ते और प्रोफेशनल जिंदगी को अलग-अलग रखना चाहते थे। कक्कड़ कहती हैं, 'हम अपने काम पर बहुत फोकस्ड हैं। इसलिए, ऐसी कोई भी चीज जो हमारे काम से ध्यान भटकाए, हम शुरुआत में नहीं चाहते थे। मगर अब हम इसे पूरी गरिमा के साथ सबके सामने लाना चाहते हैं।' इस कपल का कहना है कि उनके अलग-अलग व्यक्तित्व और प्रोफेशन उनके लिए फायदेमंद रहे हैं। शौमिक कहते हैं कि 'वह बहुत ही नारी-सुलभ और चुलबुली थीं और पार्टी की जान थीं। आप देख सकते थे कि हर कोई उनकी ओर चुंबक की तरह खिंचा चला आ रहा था। मुझे उनकी यह बात बहुत पसंद आई।'

शौमिक ने किया सपोर्ट

कक्कड़ का कहना है कि उनके लिए सबसे जरूरी बात यह थी कि उन्हें कोई ऐसा व्यक्ति मिले जो उनके करियर को समझे और उसका समर्थन करे, बिना उन्हें बदलने की कोशिश किए। मुझे शौमिक की यह बात बहुत पसंद है क्योंकि मेरे किसी भी अजीबोगरीब आइडिया में वे मेरा साथ देते हैं। उन्होंने कभी भी मेरी जिंदगी जीने के तरीके में कोई रुकावट नहीं डाली और वे इसमें बहुत सपोर्टिव रहे हैं।

सलमान खान दोबारा बिग बॉस में नहीं आने देंगे

अभिनेत्री डोनल बिष्ट अपने नए इंटरव्यू को लेकर चर्चा में हैं। उन्होंने बिग बॉस 15 में एक कंटेस्टेंट के तौर पर हिस्सा लिया था। वह घर में ज्यादा समय तक नहीं रह पाईं।

बातचीत के दौरान डोनल ने कहा कि वह बिग बॉस के लिए नहीं बनी थीं। जब उनसे पूछा गया कि क्या वह कभी शो में वापस जाने का फैसला करेंगी, तो डोनल ने कहा कि सलमान खान उन्हें ऐसा करने नहीं देंगे। बातचीत में डोनल बिष्ट ने कहा, 'उस समय, जब मैं बाहर हुई तो बहुत से लोगों ने मुझ पर प्यार बरसाया।' उन्होंने आगे कहा 'वह प्लेटफॉर्म परखता है कि आप कितने स्मार्ट और चालाक हो सकते हैं।' वह आगे कहती हैं 'अगर आप असल जिंदगी में ऐसी चीजें नहीं जानते हैं, तो आप कुछ एक्स्ट्रा क्यों करेंगे?' अभिनेत्री ने बताया 'बिग बॉस हाउस का माहौल मुझे तब सूट नहीं किया।' डोनल बिष्ट ने यह भी बताया कि एक इंसान के तौर पर वह बिग बॉस के बाद बदल गई हैं। उन्होंने कहा, 'बिग बॉस के बाद, मैं देख पाई कि दुनिया कैसी है। मैं यह समझने लगी कि कौन दोमुंहा है और कौन मुझे नीचे खींचने की कोशिश कर रहा है। कुछ लोगों ने मुझे गुमराह किया, जिसकी वजह से मैंने कई प्रोजेक्ट्स खो दिए। मैंने हमेशा अपने आस-पास सही लोगों को रखने की कोशिश की।'

सलमान के साथ खड़ी होना चाहती हैं डोनल

जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें कभी दोबारा बिग बॉस में जाने में कोई दिलचस्पी है? इस पर डोनल बिष्ट ने कहा 'सलमान सर मुझे बिग बॉस करने नहीं देंगे। उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं बिग बॉस के लिए नहीं बनी हूं। मैं सिर्फ काम के बारे में बात करती हूं। अगर मुझे सलमान सर के साथ स्टेज पर खड़े होने का मौका मिला तो मैं जरूर वापस जाऊंगी।'

'7 डॉग्स' को संजय दत्त ने बताया खास प्रोजेक्ट

अभिनेता संजय दत्त जल्द ही सलमान खान के साथ इंटरनेशनल फिल्म '7 डॉग्स' में नजर आएंगे। यह फिल्म अगले हफ्ते रिलीज होने वाली है। एक्टर ने इस फिल्म में काम करने के अपने अनुभव को साझा किया। उन्होंने यह भी बताया कि भारतीय दर्शकों को यह फिल्म क्यों देखनी चाहिए?

फिल्म '7 डॉग्स' एक अंतरराष्ट्रीय प्रोजेक्ट है। कुछ दिन पहले ही मेकर्स ने फिल्म का नया ट्रेलर लॉन्च किया था। अब इस फिल्म के बारे में संजू बाबा ने अपने अनुभव बताए। संजू ने कहा मैं '7 डॉग्स' के दर्शकों तक पहुंचने को लेकर बेहद उत्साहित हूं। मुझे भारत में इसके रिलीज होने का बहुत इंतजार था। इस तरह के बड़े प्रोजेक्ट में अंतरराष्ट्रीय टीम के साथ काम करने का काफी खास अनुभव रहा है। इस तरह के प्रोजेक्ट का हिस्सा बनने का मौका जिंदगी में बार -बार नहीं मिलता। यह फिल्म भारतीय दर्शकों को पसंद आएगी। उन्हें इसे देखकर खूब मजा आने वाला है। जब दर्शक इसे बड़े पर्दे पर देखेंगे तो उनके लिए यह अलग तरह का अनुभव होगा। अपनी बातचीत में आगे संजय दत्त ने कहा, 'मुझे लगता है भारतीय दर्शकों को इस फिल्म को खुले मन से देखना चाहिए और वे हैरान रह जाएंगे। यह एक अंतरराष्ट्रीय फिल्म है, लेकिन इसकी भावनाएं दर्शकों के लिए आसानी से जुड़ने वाली हैं। इसमें एक्शन है, ड्रामा है, दमदार किरदार हैं और फिल्म को बहुत बड़े स्तर पर बनाया गया है।'

फिल्म '7 डॉग्स' के बारे में

इसे फिल्ममेकर जोड़ी आदिल अल अरबी और बिलाल फल्लाह ने डायरेक्ट किया है। इस फिल्म का कॉन्सेप्ट और को-राइटिंग तुर्की अलशेख ने की है। यह भारत, मिस्र, यूरोप, हॉलीवुड और मिडिल ईस्ट के एक्टिंग टैलेंट को एक साथ ला रही हैं। फिल्म का प्रोडक्शन सेला स्टूडियोज ने जनरल एंटरटेनमेंट अथॉरिटी और रियाद सीजन ने मिलकर किया है। यह भारत में 21 अगस्त को रिलीज होने वाली है।

परेश रावल और एल्विश के बाद मालामाल वीकली 2 में महेश मांजरेकर की एंट्री?

'मालामाल वीकली 2' को लेकर इन दिनों काफी हलचल है। फिल्म की स्टारकास्ट लगातार चर्चा में बनी हुई है। इसी बीच चर्चा शुरू हुई की फिल्म की कास्ट से अभिनेता महेश मांजरेकर भी जुड़ चुके हैं।

महेश के लिए खास किरदार, मेकर्स को भी पसंद आया

सूत्रों की माने तो इस फिल्म में महेश के लिए एक मजेदार किरदार है। मेकर्स को लगा कि इस रोल के लिए वह बिल्कुल सही रहेंगे। उन्हें भरोसा है कि महेश इस किरदार के साथ पूरा न्याय करेंगे और उनकी परफॉर्मेंस दर्शकों को पसंद आएगी। इस सीक्वल का ऑफर पाकर महेश भी खुश थे। उन्होंने हामी भी भर दी।

मैं इस बारे में ज्यादा नहीं बताना चाहता

इस बारे में जब अमर उजाला डिजिटल ने महेश से बात की तो उन्होंने कहा, 'देखिए, मैं इस चीज का हिस्सा हो सकता हूं, या शायद नहीं भी...। सच कहूं तो मैं इस बारे में ज्यादा कुछ नहीं बताना चाहता।' वहीं 'मालामाल वीकली' के पहले पार्ट के बारे में पूछने पर महेश ने कहा, 'जी हां, मैंने वो देखी है और मुझे वो बहुत अच्छी फिल्म लगी। वह एक मजेदार फिल्म थी। खैर, इससे ज्यादा मैं कुछ नहीं कह सकता।'

रितेश से एल्विश तक, ये सितारे आएंगे नजर

बता दें कि 'मालामाल वीकली 2' की कास्ट को लेकर अब तक सामने आई रिपोर्ट्स में रितेश देशमुख, परेश रावल, राजपाल यादव, एल्विश यादव, रवीना टंडन, परिणीति चोपड़ा, शिल्पा शिरोडकर, फरदीन खान के नाम शामिल हैं। फिल्म का निर्देशन 'तेरी बातों में ऐसा उलझा जिया' फेम अमित जोशी करेंगे और इसकी शूटिंग नवंबर से शुरू हो सकती है।

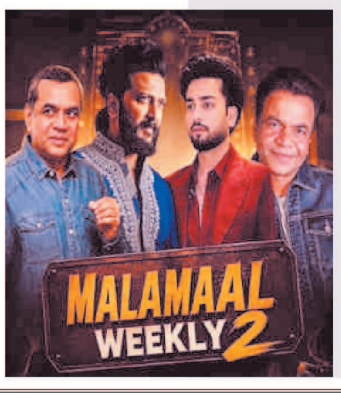

2006 में आई थी 'मालामाल वीकली'

'मालामाल वीकली' 2006 में रिलीज हुई थी। प्रियदर्शन के निर्देशन में बनी इस कॉमेडी फिल्म में परेश रावल, ओम पुरी, रितेश देशमुख और राजपाल यादव जैसे कलाकार नजर आए थे। गांव, लॉटरी और पैसों के लालच के इर्द-गिर्द घूमती इस कहानी ने अपनी देसी कॉमेडी से दर्शकों का खूब मनोरंजन किया था। फिल्म आज भी अपनी कॉमेडी और यादगार किरदारों के लिए जानी जाती है।

राजनैतिक रूप से वीवीआईपी जिला कबीरधाम में तूलिका प्रजापति बनी 21 वीं कलेक्टर

कबीरधाम जिले के विकास में कलेक्टरों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, कोई कोई कलेक्टर ही लोगो के दिलो में जगह बना पाता है

नई दृष्टिबिंदु / कवर्धा

पूर्ण रूप से कृषि पर आधारित व राजनैतिक रूप से पुष्ट वीवीआईपी जिला-कबीरधाम जिला गठन के बाद से विकास की ओर अग्रसर हो युवा कबीरधाम हो चला है । जिले में विकास को गति देने में और नयी नयी परियोजनाओं की कल्पना को साकार रूप देने में यहां राजनेताओं के साथ साथ पदस्थ रहे कलेक्टरों की भूमिका भी मुख्य रही हैं। जिसमें से कुछ कलेक्टरों का ही नाम जनता के बीच में लोकप्रिय हुआ और आज भी चर्चा में रहता है

कबीरधाम जिले मे प्रथम कलेक्टर के रूप में एस डी अग्रवाल का नाम दर्ज है। इसके बाद जिले मे चौंक-चौराहों पर आम लोंगों की ओर से चर्चा-परिचर्चा में स्वतः ही नाम आतें हैं, उनमें डाक्टर सुब्बारेडडी, एस के तिवारी, सोनमणी बोरा, मुकेश बंसल, नीरज बंसोड़, श्रीमती आर संगीता, पी दयानंद, अवनीश शरण, रमेश शर्मा और जन्मजेय महोबे व गोपाल वर्मा ही शामिल है । जबकि इस जिले में अभी तक 20 कलेक्टरों की पदस्थापना हो चुकी है और अब 21 वे कलेक्टर के रूप में श्रीमती तूलिका प्रजापति ने जिले की कमान अपने हाथ मे ली है ।

डॉ. एम व्ही सुब्बारेडडी को भोरमदेव सहकारी शक्कर उत्पादक कारखाना को अल्प समय मात्र ग्यारह माह में चालू कराये जाने के नाम से जाना जाता है। साथ ही सुतियापाट सिंचाई परियोजना, नये कलेक्टर कार्यालय भवन निर्माण, भोरमदेव से बंजारी पालक सडक निर्माण, बोडला से दलदली सडक निर्माण और कलेक्टर बंगला व एस पी बंगला निर्माण मील का पत्थर रहा है ।

सुब्बारेड्डी के बाद सोनमणी बोरा को उजार्वान व युवा कलेक्टर के रूप में याद किया जाता हैं। सोनमणी बोरा के नेतृत्व मे ग्यारह घण्टे में सैंतीस लााख से अधिक पौधे रोपने का गिनीज बुक आफ लिम्का रिकार्ड में जिला का पहली बार नाम दर्ज हुआ था और कवर्धा जिला कबीरधाम का नाम विश्व स्तर पर पहचाना गया । अब लोग कबीरधाम जिला को ग्रीन जिला के नाम से जानने लगे थे भले ही आज उनमे से अधिकांश रतन जोत पौधों की जोत बुझ चुकी है । सोनमणी बोरा ने कवर्धा शहर को सही मायनें में जिला मुख्यालय के अनुरूप विकास को गति दी थी जिससे कवर्धा कस्बा को आज का कवर्धा शहर बनाया। जो लोग पहले का कवर्धा देखें है और आज का कवर्धा देखतें है तो वे लोग स्वतः कह देतें हैं,कि पहले का कवर्धा और आज का कवर्धा में जमीन आसमान का अंतर नजर आता है। कवर्धा शहर में सडकों का चौंडीकरण, डिवाइडर युक्त चमचमाती सडकों का निर्माण, शहर में दुधिया हाईमास्क लाइट, तालाबों का सौंदर्यीकरण, म्युजिकल फाउण्टेंन (वर्तमान में लापता) से सुसजिजत उर्जा पार्क और अटल उदयान का निर्माण (वर्तमान में लापता), गांधी मैदान व सरदार वल्लभ भाई पटेल मैदान में कलात्मक बाउंड्रीवाल का निर्माण, जिला अस्पताल निर्माण, नये जिला पंचायत भवन निर्माण, पृथक महिला कालेज निर्माण, भोरमदेव मंदिर परिसर में गार्डन निर्माण, लक्ष्मण झुला निर्माण, सरोदा बांध में गार्डन निर्माण आदि कार्यो को संपादित कराये जाने के नाम से आज भी याद किये जातें हैं।

इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि कलेक्टर सोनमणी बोरा के साथ अमित कटारिया, श्रीमती शालिनी रैना, रजत कुमार, जैसे युवा अधिकारियों की टीम थी। कवर्धा शहर का चौंडीकरण करने में अमित कटारिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी परंतु आई ए एस लोगो में एकदूसरे के काम को आगे बढ़ाने की जगह खुद कुछ नया करने की चाहत पुराने कार्यो के रख रखाव नहीं होने के चलते रख रखाव के आभाव में तालाब गंदे तो उद्यान उजाड़ हो गए । बोरा के कार्यकाल के दौरान अधिक उत्पादन के चलते गन्ना खरीद कर जलाये जानें का निर्णय ने सोनमणी बोरा द्वारा किये गये सभी विकास कार्यो पर दाग की तरह काम किया । इस बात से इंकार भी नहीं किया जा सकता कि कलेक्टर बोरा ने किसानों का एक-एक गन्ना खरीदकर भुगतान कराया।और गन्ना किसानों को राहत प्रदन की थी जिससे तत्कालीन मुख्यमंत्री डॉ रमण भी काफी प्रभावित हुए थे ।

बोरा के बाद आये सिद्धार्थ कोमल सिंह परदेशी और पी दयानंद को चुनाव मेंनेजमैन्ट के कारण से जाना जाता रहा है। कलेक्टर परदेशी और दयानंद ने विधान सभा, लोक सभा, त्रिस्तरीय पंचायत और नगरीय निकायों का निर्वाचन निर्वादित रूप से संपन्न करायें। परदेशी ने ही बुढा महादेव मंदिर कवर्धा से भोरमदेव मंदिर तक पदयात्रा का शुभारंभ किये, जिसके परिणाम स्वरूप आज भोरमदेव मंदिर को राष्ट्रीय स्तर पर पर्यटन के क्षेत्र में दिनों-दिन ख्याति प्राप्त हो रही है। आज भी परदेशी, पी दयानंद, श्रीमती आर संगीत श्रावण मास के प्रथम सोमवार को जहां भी रहें, पदयात्रा में शामिल होंने आते जरूर है। भोरमदेव सहकारी शक्कर कारखाना पहली बार फायदे में आया, शेयरधारकों और गन्ना उत्पादक कृशकों को बोनस वितरण प्रारम्भ किया गया जिसका श्रेय परदेशी को जाता है।

जिला कबीरधाम का ग्यारहवें नम्बर में पदस्थ कलेक्टर मुकेश बंसल ने तो अपनी अलग ही पहचान बनायी है । अपने काम को ही पूजा मानने वाले इस कलेक्टर ने विकास को नयी गतिशीलता दी है । शहरों की जगह गांव-गांव में विकास कैसा किया जाता है दिखा दिया था । उनके कार्यकाल में गांव भी शहर की तरह सुंदर और आकर्शित लगनें लगे। बैगा बाहुल्य क्षेत्र का गांव रेंगाखार में सुंदर गार्डन, बस स्टैण्ड, आश्रम, सुंदर बाजार, खाद्य गोदाम, सुंदर चौंक का निर्माण और सी सी रोड निर्माण कर गांव का स्वरूप बदल दिये गये इसी तरह दलदली की तस्वीर बदली और अंतिम व्यक्ति तक शासकीय योजनाओं को पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया । इसी तर्ज पर पोंडी, बोडला, सहसपुर-लोहारा, पाण्डाताराई, पण्डरिया, मोहगांव, कुकदुर, झलमला, पिपरिया, दामापुर, कुण्डा, कुई आदि गांवों का कायाकल्प कर जिले को एक नयी पहचान दी थी । बंसल ने आई ए पी राशि का समय से पहले निर्माण कार्य संपादित करानें में देश में प्रथम स्थान पर जिला-कबीरधाम को लाकर खडा किया साथ ही जो कार्य सत्र-2007-08 व 2009-10 से अपूर्ण पडे थे उन कार्यो को भी विषेश रूचि दिखाते हुये पूर्ण कराया । शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र मे भी योगदान उल्लेखनीय है।

जिले की पहली महिला कलेक्टर श्रीमती आर संगीता अपनी कड़क छवि व कठोर प्रशासनिक छवि व राजनैतिक दबावों से परे रहने के नाम से जानी जाती रही है । चौदवें कलेक्टर के रूप में पी दयानंद ने अपनी उपस्थिति दी । प्रदेश के मुखिया डा रमन सिंह जिले मे विभिन्न कार्यक्रमो में जिला प्रशासन की व्यवस्था और भीड देखकर लोग अचंभित हो उठे, इसके पहले इतने लोगों की कार्यक्रम में सहभागिता देखने को नहीं मिली थी। मुख्यमंत्री डा रमन सिंह ने भी कलेक्टर की तारीफ भी की थी । इन्हें भाजपा के लिए लक्की कलेक्टर भी कहा जाता रहा है ।

दयानन्द के बाद आये कलेक्टर धनञ्जय देवांगन के सहज सरल व्यवहार से ग्रामीण जान काफी खुश नजर आते रहे है परंतु इनके कार्यकाल में 275 दिनों में 500 नवजात शिशुओ की मौत ने स्वास्थ्य विभाग की पोल खोली तो शिक्षा के शिक्षा के क्षेत्र में मिशन 75 ला कर जिले को शिक्षा के क्षेत्र में नई ऊंचाइयां दी है । युवाओ को स्वरोजगार की द्दष्ट से ट्रेंड करने और प्रेरित करने कौशल उन्नयन में विशेष रुचि ले कौशल उन्नयन के कार्यक्रम चलाये । उनके सहज सरल स्वभाव के चलते लोगो के बीच सरपंच साहब और नोटिस मास्टर के रूप में लोकप्रिय रहे है ।

अब धुर नस्सल जिले में पदस्थ रहे दबंग कलेक्टर नीरज कुमार बंसोड़ जिन्होंने सुकमा को एक नई पहचान दी थी ने जिले की कमान सम्हाली किंतु विकास के लिए सड़क चौड़ीकरण के कार्य के ऋषभदेव चौक में पहुंचते ही रसूखदार के घर के सामने पहुंचा विकास का पहिया अटक गया और राजनीतिक हस्तक्षेप से शहर विकास की महत्वकांशी योजना के अटकने से निराश हुए नीरज बंसोड़ जिले में 6 माह की अल्पावधि में ही जिले से दुखी मन से रवाना हो गए । नीरज बंसोड़ की पदस्थापना से सोनमणि बोरा और मुकेश बंसल के बाद धीमी पड़ी हुई विकास की गति को बुलेट ट्रेन सरीखी स्पीड मिलने की उम्मीद थी किंतु राजनीति के शिकार नीरज बंसोड़ को मौका नही मिल पाया और जिले के विकास को मिलने वाली स्पीड थम गई ।

बाद के कलेक्टर अवनीश शरण ने चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र को बेहतर बनाने आमूलचूल परिवर्तन किया जिसमें उनके द्वारा वनांचल क्षेत्रो में स्वस्थ्यसेवाओ को बेहतर करने बाइक एम्बुलेंस और जिले के वनांचल क्षेत्र के शिक्षक विहीन स्कूलों में शिक्षा के साथ साथ रोजगार का भी सृजन करने का एक सफलतम प्रयास किया । शिक्षा के साथ रोजगार की सोच के चलते संरक्षित बैगा व आदिवासी परिवार के शिक्षित युवाओं को शाला संगवारी के रूप में पदस्थ कर शिक्षा और रोजगार की राह खोली थी । विश्वव्यापी कोविड महामारी के प्रथम संकमण काल में उन्होंने कोविड के संक्रमण को रोकने के लिए जबरदस्त रणनीति तैयार कर जन सुरक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया ।

अवनीश शरण के बाद महामारी के दूसरे महा संक्रमण के दौर में कलेक्टर रमेश शर्मा ने जिले की कमान सम्हाली और वे अपने सहज सरल व्यवहार के कारण जनता के बीच अपनी एक अच्छी छवि बना पाए । कॅरोना काल के दूसरे महा संक्रमण के दौर में भी अपने बेहतर मैनेजमेंट और कॅरोना मरीजों को बेहतर स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध कराने निजी चिकित्सालयों से समन्वय का बेहतर उदाहरण प्रस्तुत किया, सालों से नजूल में अटकी पड़ी फाइलों के तेजी से निपटान कर शहर वासियों को राहत दी और आदिवासियों की नियम कानून के पेंच में फंसी पड़ी जमीनों की अनुमति देने और झंडा कांड के बाद बने जिले के गंभीर हालात पर कुशलता पूर्वक काबू करने की प्लानिंग व जिले में शान्ति व्यवस्था में बेहतर प्रयास के लिए आज भी याद किये जाते है ।

रमेश शर्मा के बाद जन्मजेय मोहबे के कार्यकाल की बात करें तो कबीरधाम (कवर्धा) जिले में उन्होंने विशेष पिछड़ी जनजातियों, विशेषकर बैगा समुदाय के बच्चों एवं महिलाओं के लिए उन्हीं की बोली भाखा में कुपोषण से मुक्त कराने की दिशा में ह्लपुट बारो सेढ़ी बढ़नह्व (पुट बारो सेरी बाढ़न) जैसे अभिनव अभियान की शुरूआत कर जनजातीय क्षेत्रों में पोषण और स्वास्थ्य के मुद्दे को प्राथमिकता दी। उनके कार्यकाल में लोकतंत्र के दो महापर्व विधानसभा एवं लोकसभा निर्वाचन का सफलतापूर्वक संम्पन्न भी हुआ, जिसमें स्वतंत्र, निष्पक्ष एवं शांतिपूर्ण निर्वाचन की लोकतांत्रिक परंपराओं को मजबूत करते हुए आमजन के लोकतंत्र और निर्वाचन प्रक्रिया के प्रति विश्वास को कायम रखने में महत्वपूर्ण सफलता मिली ।

मोहबे के बाद 20 वे कलेक्टर गोपाल वर्मा जिले में लोहारिडीह कांड, कामठी कांड में बेहतरीन प्रशासक की भूमिका व मेडिकल कालेज की सौगात और भूमिपूजन के बाद 10 साल से नए बस स्टैंड जाने को तरसती बसों को नए बस स्टैंड शिफ्ट करने ले लिए विशेष रूप से जाने जाएंगे ।

अब राजनैतिक रूप से पुष्ट और विपक्ष ने सदा निशाने पर रहने वाले जिला कबीरधाम की 21 वीं कलेक्टर के रूप में श्रीमती तुलिका प्रजापति ने जिले की कमान सम्हाली है । इनके समक्ष पूर्व कलेक्टरों के भरोसे और सुशासन की परंपरा को और आगे बढ़ाने की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होगी। राजस्व नजूल व आदिवासियों के बिक्री की अनुमति के लिए धूल खाती फाइलों, अवैध खनन, अतिक्रमण, भू-माफिया व अन्य प्रशासनिक चुनौतियों पर जीरो टॉलरेंस की नीति क्रियान्वित होगी या प्रभावशील राजनीति हावी होगी अभी भविष्य के गर्भ में है किंतु सालों से थम सी गई विकास की गति को फिर से रफ्तार मिलने की उम्मीद आमजन के मन में है । नव पदस्थ कलेक्टर को शासन-प्रशासन के प्रति जनता के विश्वास को और मजबूत करते हुए सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना, शिक्षा एवं स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को अंतिम व्यक्ति तक सुनिश्चित करना, कुपोषण की चुनौती पर प्रभावी ढंग से काम करना तथा युवाओं और जरूरतमंद परिवारों के लिए रोजगार के अवसर उपलब्ध कराना उनकी प्राथमिक चुनौतियों में शामिल होंगी। साथ ही कामठी जैसे विवाद, लोहारिडीह जैसे कांड, झंडा कांड के बाद बने धार्मिक विवाद व जातिय हिंसा कर्फ्यू, धरमपुरा कांड, हरमो कांड की पुनरावृत्ति ना हो जिले की शांति व्यवस्था बनाये रखने के साथ साथ पूर्व मुख्य मंत्री व वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष डॉ रमण सिंह व उपमुख्य मंत्री विजय शर्मा के गृह जिले व पूर्व मंत्री मोहम्मद अकबर व पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के सदा निशाने पर रहने वाली कबीरधाम जिले में राजनैतिक संतुलन बनाये रखना भी चुनौतीपूर्ण होगा। राजनैतिक संतुलन के साथ साथ जिले में शासन की योजनाओं और प्रशासनिक सेवाओं को सहज, सरल एवं पारदर्शी तरीके से अंतिम छोर तक पहुंचाकर आम नागरिक के मन में यह विश्वास और भावना मजबूत करना होगा कि यह सरकार मेरी है और शासन-प्रशासन मेरे साथ खड़ा है।

खास खबर

सोशल मीडिया पर प्रसारित भ्रामक जानकारी के संबंध में स्थिति स्पष्ट, स्वास्थ्य विभाग के समस्त बिलों की प्रक्रिया पूर्ण

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

सोशल मीडिया पर बेमेतरा जिले के स्वास्थ्य विभाग एवं कर्मचारियों के वेतन संबंधी बिलों को लेकर प्रसारित की जा रही जानकारी के संबंध में जिला प्रशासन द्वारा स्थिति स्पष्ट की गई है। सोशल मीडिया पर प्रसारित जानकारी भ्रामक एवं वास्तविक स्थिति से परे है। जिले में स्वास्थ्य विभाग से संबंधित बिलों की आवश्यक प्रक्रिया लगातार की जा रही है। जिला कोषालय में प्रस्तुत स्वास्थ्य विभाग के समस्त बिल जिसमें वेतन संबंधी बिल भी शामिल हैं को आवश्यक प्रक्रिया के बाद treasury द्वारा clear किया गया गया है। वर्तमान में treasury में स्वास्थ्य विभाग से संबंधित कोई बिल लंबित नहीं है। स्वास्थ्य विभाग में विभिन्न योजनाओं एवं स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित डाटा एंट्री की प्रक्रिया भी महत्वपूर्ण है। जिले में गर्भवती महिलाओं के एएनसी चेकअप से संबंधित जानकारी की डाटा एंट्री एवं उसका सत्यापन आवश्यक है, ताकि गर्भवती महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति की समय पर निगरानी करते हुए उन्हें आवश्यकता के अनुसार बेहतर उपचार एवं स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराई जा सकें। इसी प्रकार छोटे बच्चों के समयबद्ध टीकाकरण की जानकारी का रिकॉर्ड एवं डाटा एंट्री भी आवश्यक है, जिससे बच्चों के टीकाकरण की स्थिति की नियमित निगरानी सुनिश्चित हो सके। जिला प्रशासन द्वारा स्वास्थ्य सेवाओं से संबंधित वित्तीय एवं विभागीय प्रक्रियाओं को नियमानुसार समयबद्ध रूप से पूरा किया जा रहा है। साथ ही स्वास्थ्य सेवाओं की प्रभावी निगरानी एवं हितग्राहियों को समय पर सेवाओं का लाभ सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक डाटा संधारण एवं डाटा एंट्री पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

जिले में अब तक 440.6 मिमी. औसत वर्षा दर्ज

बेमेतरा। चालू बारिश सीजन के दौरान बेमेतरा जिले में 01 जून 2026 से 18 अगस्त 2026 प्रतिवेदित दिनांक तक की स्थिति में सवेरे 8.00 बजे तक जिले में 440.6 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है। जिले में अब तक सर्वाधिक वर्षा तहसील बेरला में 566.2 मि.मी. तथा न्यूनतम 307 मि.मी. वर्षा नवागढ़ तहसील में दर्ज की गई है। संयुक्त जिला कार्यालय के भू-अभिलेख शाखा से प्राप्त जानकारी के अनुसार बेमेतरा तहसील मे 361 मि.मी. वर्षा, देवकर तहसील में 374 मि.मी. वर्षा, थानखम्हरिया तहसील में 528 मि.मी. व भिंभौरी तहसील में 494.7 मि.मी., साजा तहसील में 473.5 मि.मी.वर्षा, दाढ़ी तहसील मे 412 मि.मी. वर्षा एवं नांदघाट तहसील में 448.5 मि.मी. औसत वर्षा दर्ज की गई है।

नेशनल लोक अदालत में ज्यादा से ज्यादा प्रकरणों के निराकरण के लिए अधिवक्ताओं से सहयोग का आह्वान

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) एवं छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, बिलासपुर के निदेर्शानुसार आगामी नेशनल लोक अदालत 12 सितम्बर 2026 के सफल आयोजन एवं अधिक से अधिक प्रकरणों के निराकरण को लेकर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बेमेतरा द्वारा बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बेमेतरा सरोज नंद दास ने की। बैठक में अधिवक्ता संघ अध्यक्ष बेमेतरा प्रणीश चौबे, प्रथम जिला एवं अपर सत्र न्यायाधीश देवेन्द्र कुमार, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट मोहित सिंह, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण स्वर्णलता ओम यादव सहित बार के अधिवक्ता उपस्थित रहे।

प्रधान जिला न्यायाधीश ने अधिवक्ताओं से नेशनल लोक अदालत में अधिक से अधिक प्रकरणों का आपसी राजीनामा एवं सुलह-समझौते के माध्यम से निराकरण कराने में सक्रिय सहयोग का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अधिवक्ता प्रकरणों का सतत पर्यवेक्षण करते हुए पक्षकारों को आपसी सहमति से विवादों का समाधान करने के लिए प्रेरित करें। न्यायिक अधिकारियों को भी राजीनामा योग्य सिविल एवं दाण्डिक प्रकरणों, घरेलू हिंसा अधिनियम तथा परक्राम्य लिखत अधिनियम की धारा 138 से संबंधित प्रकरणों में पक्षकारों के साथ प्री-सिटिंग कर अधिक से अधिक प्रकरणों का निराकरण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए।

मीडियेशन फॉर नेशन 3.0 के माध्यम से विवादों के शीघ्र समाधान पर जोर

बैठक में Mediation for Nation 3.0 अभियान के प्रभावी क्रियान्वयन पर भी चर्चा की गई। बताया गया कि न्यायालयों में लंबित ऐसे प्रकरणों की पहचान की जा रही है, जिनका समाधान आपसी सहमति एवं समझौते के माध्यम से संभव है। चिन्हित प्रकरणों की प्री-मीडिएशन स्क्रीनिंग, पक्षकारों को सूचना देने तथा उपयुक्त मामलों को मध्यस्थता केन्द्रों में संदर्भित करने की प्रक्रिया की जा रही है। अभियान के अंतर्गत वैवाहिक एवं पारिवारिक विवाद, मोटर दुर्घटना दावा प्रकरण, चौक बाउंस सहित अन्य समझौता योग्य मामलों को मध्यस्थता के माध्यम से निराकृत करने के लिए चिन्हित किया जा रहा है। जिला न्यायालय एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा न्यायिक अधिकारियों, अधिवक्ताओं, मध्यस्थों एवं संबंधित कर्मचारियों के समन्वय से अभियान को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

प्री-लिटिगेशन प्रकरणों के निराकरण के लिए विभागीय अधिकारियों से भी चर्चा

आगामी नेशनल लोक अदालत के संबंध में विद्युत विभाग, बीएसएनएल एवं नगर पालिका के अधिकारियों के साथ भी बैठक आयोजित की गई। बैठक में जलकर, संपत्ति कर, बिजली बिल एवं टेलीफोन बिल से संबंधित अधिक से अधिक प्री-लिटिगेशन प्रकरणों को लोक अदालत में निराकरण के लिए प्रस्तुत करने, पंजीयन तथा नोटिस तामिली की प्रक्रिया पर चर्चा की गई। अधिकारियों से संबंधित प्रकरणों के पक्षकारों को समय पर नोटिस की तामिली सुनिश्चित करने तथा पक्षकारों से सौहार्दपूर्ण वातावरण में आपसी राजीनामा एवं समझौते के माध्यम से प्रकरणों के निराकरण के लिए आवश्यक पहल करने कहा गया। नेशनल लोक अदालत एवं ह्यमीडियेशन फॉर नेशन 3.0ह्व के माध्यम से अधिक से अधिक प्रकरणों का आपसी सहमति से शीघ्र निराकरण कर पक्षकारों को न्याय सुलभ कराने पर विशेष जोर दिया गया।

गुरु रविदास महाराज चौक के सौंदर्यीकरण के लिए 25 लाख रुपए की घोषणा की

सामाजिक भवन निर्माण के लिए 20 लाख रुपए की स्वीकृति

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज की कृति और स्मृतियों को संजोए रखने के उद्देश्य से बेमेतरा शहर के बाजार पारा सब्जी मंडी के पास स्थित गुरु रविदास महाराज चौक के सौंदर्यीकरण के लिए 25 लाख रुपए की राशि से विकास कार्य कराने की घोषणा की है। इसमें उप मुख्यमंत्री शर्मा द्वारा 15 लाख रुपए तथा बेमेतरा विधायक द्वारा 10 लाख रुपए की राशि की घोषणा की गई है। उप मुख्यमंत्री शर्मा ने ग्राम चोरभट्ठी के पास गुरु रविदास महाराज सामाजिक भवन के निर्माण के लिए भी 20 लाख रुपए स्वीकृत करने की घोषणा की है। इससे क्षेत्र में सामाजिक एवं सामुदायिक गतिविधियों के लिए बेहतर सुविधा उपलब्ध होगी।

उल्लेखनीय है कि उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा द्वारा गत दिवस बेमेतरा के टाउन हॉल में आयोजित संत शिरोमणि गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती के अवसर पर आयोजित पवित्र माटी एवं गंगाजल कलश वितरण कार्यक्रम में उक्त घोषणाएं की गई। इन विकास कार्यो से गुरु रविदास महाराज के विचारों, कृतित्व और सामाजिक समरसता के संदेश को संजोने के साथ ही क्षेत्र के नागरिकों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी।

राखी की मिठास में घुला महतारी वंदन का संबल, गीता वैष्णव के जीवन में आई खुशियों की नई रोशनी

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

रक्षाबंधन भाई-बहन के प्रेम, स्नेह और विश्वास का पर्व है। इस पावन अवसर पर बहन अपने भाई की कलाई पर राखी बांधकर उसके सुखी और स्वस्थ जीवन की कामना करती है, तो भाई भी बहन की खुशियों और सम्मान की रक्षा का संकल्प लेता है। बेमेतरा की गीता वैष्णव के लिए इस वर्ष का रक्षाबंधन कुछ और खास है। महतारी वंदन योजना से मिलने वाली नियमित आर्थिक सहायता ने उनकी खुशियों को एक नया सहारा दिया है। इस बार वे अपने भाई के लिए अपने पैसों से मिठाई खरीदेंगी, राखी बांधेंगी और पूरे उत्साह के साथ रक्षाबंधन का पर्व मनाएंगी।

गीता वैष्णव बताती हैं कि महतारी वंदन योजना के माध्यम से मिलने वाली आर्थिक सहायता उनके परिवार के लिए उपयोगी साबित हो रही है। रोजमर्रा की जरूरतों में सहयोग मिलने के साथ ही उन्हें अपनी छोटी-छोटी इच्छाएं पूरी करने का आत्मविश्वास भी मिला है। पहले जिन छोटी खुशियों के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता था, अब उन्हें अपनी जरूरत के अनुसार खर्च करने की स्वतंत्रता महसूस होती है।

रक्षाबंधन की तैयारियों को लेकर गीता के चेहरे पर अलग ही उत्साह है ।वे बताती हैं कि इस बार वे अपने भाई के लिए मिठाई खरीदेंगी। राखी के दिन भाई की कलाई पर राखी बांधेंगी और परिवार के साथ मिलकर मिठाई खिलाकर इस पर्व की खुशियां साझा करेंगी। उनके लिए यह सिर्फ मिठाई खरीदने की बात नहीं, बल्कि अपने हाथ में आई आर्थिक मजबूती और आत्मविश्वास की खुशी है। गीता वैष्णव कहती हैं, महतारी वंदन योजना से मुझे आर्थिक सहारा मिला है। इस बार राखी पर मैं अपने भाई के लिए अपने पैसों से मिठाई लूंगी और खुशी से रक्षाबंधन मनाऊंगी। यह मेरे लिए बहुत खुशी की बात है। महिलाओं के सम्मान और आर्थिक मजबूती के लिए ऐसी योजना चलाने पर मैं मुख्यमंत्री विष्णु देव साय विष्णु भैया को हृदय से धन्यवाद देती हूं।

नेशनल लोक अदालत — राजस्व प्रकरणों के निराकरण पर विशेष जोर, शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना

राजस्व और लंबित मामलों के निपटारे के लिए अंतर-विभागीय समन्वय पर दिया बल

नई दृष्टिबिंदु / बेमेतरा

राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण (नालसा) एवं छत्तीसगढ़ राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, बिलासपुर के निदेर्शानुसार आगामी नेशनल लोक अदालत 12 सितम्बर 2026 के सफल आयोजन एवं अधिक से अधिक प्रकरणों के निराकरण को लेकर न्यायिक एवं प्रशासनिक अधिकारियों की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता प्रधान जिला न्यायाधीश एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बेमेतरा सरोज नंद दास ने की। बैठक में कलेक्टर प्रतिष्ठा ममगाई, पुलिस अधीक्षक त्रिलोक बंसल, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट मोहित सिंह, सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण स्वर्णलता ओम यादव एवं एडीएम प्रकाश कुमार भारद्वाज सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में नेशनल लोक अदालत के माध्यम से अधिक से अधिक राजस्व एवं अन्य समझौता योग्य प्रकरणों के निराकरण के लिए विभागों के बीच बेहतर समन्वय एवं प्रभावी कार्ययोजना पर चर्चा की गई। प्रधान जिला न्यायाधीश ने पुलिस विभाग को न्यायालय द्वारा पक्षकारों को प्री-सिटिंग के लिए जारी किए जा रहे नोटिस की समय पर तामिली सुनिश्चित करने तथा प्रकरणों के निराकरण में आवश्यक सहयोग प्रदान करने के निर्देश दिए।

सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने नेशनल लोक अदालत में निराकरण योग्य विभिन्न प्रकरणों के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि इसमें न्यायालयों में लंबित समझौता योग्य आपराधिक प्रकरण, चेक बाउंस के मामले, मोटर दुर्घटना दावा प्रकरण, वैवाहिक एवं पारिवारिक विवाद, सिविल वाद, बिजली एवं पानी बिल से संबंधित विवाद तथा आपदा प्रबंधन क्षतिपूर्ति संबंधी प्रकरणों का आपसी सुलह एवं समझौते के माध्यम से निराकरण किया जा सकता है।

बैठक में राजस्व विभाग से संबंधित अधिक से अधिक प्री-लिटिगेशन प्रकरणों को नेशनल लोक अदालत में प्रस्तुत करने पर विशेष जोर दिया गया। संबंधित अधिकारियों को प्रकरणों का समय-सीमा में प्रस्तुतिकरण एवं पंजीयन करने तथा पक्षकारों को नोटिस की तामिली सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। साथ ही पक्षकारों के साथ सौहार्दपूर्ण वातावरण में संवाद कर आपसी सहमति एवं राजीनामे के माध्यम से विवादों का समाधान करने के लिए आवश्यक पहल करने पर चर्चा की गई।

नेशनल लोक अदालत का लाभ अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने के लिए जिले के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक प्रचार-प्रसार करने पर भी चर्चा की गई। इसके तहत चौक-चौराहों एवं प्रमुख स्थानों पर होर्डिंग्स एवं फ्लैक्स लगाने तथा लोगों को नेशनल लोक अदालत की प्रक्रिया एवं इसके लाभों की जानकारी देने के लिए पैम्फलेट्स का वितरण करने की कार्ययोजना पर विचार-विमर्श किया गया। बैठक में अधिकारियों को अपने-अपने विभागों से संबंधित प्रकरणों के शीघ्र निराकरण के लिए आवश्यक कार्यवाही सुनिश्चित करने तथा नेशनल लोक अदालत के आयोजन का व्यापक प्रचार-प्रसार कर अधिक से अधिक पक्षकारों को इसका लाभ दिलाने के निर्देश दिए गए।

अंदर की बात

-:: खुलकर ::-

यशवंत साहू, फाउंडर भिलाई टाइम्स

भूपेश के जन्मदिन के बहाने माहौल...

आज 23 अगस्त है। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल यानी कि कका का जन्मदिन है। पूर्व संध्या यानी कि 22 अगस्त को भिलाई के रिसाली इलाके में जन्मदिन जोरदार मनाया गया। इस खास अवसर पर गुटीय राजनीति भी देखने को मिली। कांग्रेस में गुटबाजी नई चीज नहीं है। कका को खुश करने के चक्कर में कुछ कांग्रेसी पूर्व गृहमंत्री ताम्रध्वज साहू को नाराज कर दिए। यानी कि दुर्ग ग्रामीण में भूपेश का जन्मदिन मनाना बहुतों को पच नहीं रहा है। अलग-अलग मायने निकाले जा रहे हैं। कह रहे हैं कि आने वाले नगरीय निकाय चुनाव से पहले कांग्रेसी भूपेश को ये साबित करने में लगे हैं कि उनका जलवा बरकरार है। टिकट वितरण में कका की चलेगी। शायद यही मैसेज देने के लिए दुर्ग ग्रामीण सीट में जन्मदिन मनाया गया। भूपेश का क्रेज इतना है कि भाजपा के नेता, माननीय जन्मदिन मना रहे हैं। बकायदा वीडियो पोस्ट कर रहे हैं। इस वीडियो को प्रदेश संगठन तक भेज दिया गया है। कुछेक इसे अनुशासनहीनता भी बता रहे हैं। खैर, यही तो राजनीति है। सूचिता बरकरार रखने की कोशिश है या दिखावा... ? ये तो निकाय चुनाव के वक्त भी नजर आ जाएगा।

संगठन से दूरी के बाद क्या सरोज बनेंगी राज्यपाल...?

भाजपा की धाकड़ नेत्री, पूर्व सांसद सरोज पांडेय का अपने राजनीति कॅरियर में ये पहला मौका है, जब संगठन के किसी भी पद में नहीं है। संगठन से सरोज की दूरी से उनके विरोधियों में हर्ष का माहौल है। लेकिन उनकी खुशी ज्यादा दिन नहीं टिकने वाली है। ऐसा क्यों ? ? उसके पीछे राजनीति के पंडित कहते हैं, सरोज पांडेय को बड़ी जिम्मेदारी मिलने वाली है। संगठन में नहीं, राज्यपाल के रूप में। सरोज की नियुक्ति किसी भी वक्त हो सकती है। कहा जा रहा है कि यूपी में राज्यपाल आनंदी बाई पटेल और कर्नाटक में थावरचंद गहलोत का कार्यकाल समाप्त हो रहा है। चर्चा है कि इन दो राज्यों के अलावा कुछेक और राज्य है, जहां सरोज को राज्यपाल बनाकर भेजा जा सकता है। सरोज राज्यपाल को लेकर पहली भी सुर्खियों में रही। लेकिन इस बार कंफर्मेशन के साथ उनके समर्थक और राजनीतिक पंडित बता रहे हैं।

बैकडेट का खेल, आईएएस ने पकड़ी नस...

नगर निगम को भ्रष्टाचार का सबसे सेफ अड्?डा माना जाता है। यहां लूट की संभावना खूब होती है। ठेकेदारों के साथ सांठगांठ करके अफसर अपनी जेब भरते हैं। वो चाहे निर्माण हो या सफाई हो...हर काम में कमीशन सामान्य है। अब भिलाई निगम में अधिकारी-कर्मचारियों और ठेकेदारों में खौफ है। वजह साफ है। वहां की पहली महिला कमिश्नर कअर सुरुचि सिंह...। फाइलों में गड़बड़ी मिल रही है। बैकडेट पर टेंडर निकालने की कोशिश हो रही है। ताकि, बिल निकालने में आसानी हो। आईएएस सुरुचि ने बैकडेट वाली फाइल रोक दी है। कहते हैं, इसके लिए बकायदा एक माननीय का फोन भी आया। लेकिन मैडम ने साफ कह दिया कि कलम नहीं फंसाने वाली और जिनके कलम फंसे हैं, उन्हें छोडूंगी नहीं। मैडम के इस एटिट्यूट के सब कायल हो गए हैं। इसीलिए सबके बीच खौफ है।

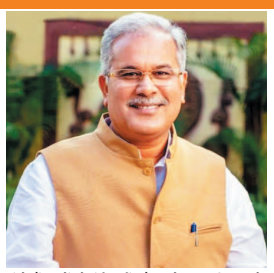

रिसॉर्ट वाले पूर्व विधायक का सलाहकार मूर्ख...

- दुर्ग संभाग के एक पूर्व विधायक के रिसॉर्ट कांड की चर्चा खूब रही। हमने पिछले सप्ताह के कॉलम में प्रकाशित किया था। उस कॉलम में हमने सिर्फ दुर्ग संभाग का हिंट दिया था। संभाग में 20 विधानसभा सीटें है। 80 से ज्यादा पूर्व विधायक हैं। इनमें से एक पूर्व विधायक खूब तिलमिला गए। उनके मूर्ख सलाहकार ने हष्ट-पुष्ट पूर्व विधायक को खुश करने के लिए हमारे ही खिलाफ थाने में कंप्लेन दर्ज कराने अपने चमचों को थाने भेज दिया। बकायदा कॉपी भी रिसिव कराया। अब इस चक्कर में पूरे प्रदेश में पूर्व विधायक के कांड की चर्चा हो रही है। यानी कि सबको पता चल गया किया वो कौन से पूर्व विधायक है ?...इसीलिए राजनीति की पाठशाला में ये बात कही जाती है कि नेता की बुद्धि भले ही कमजोर हो, वो चल जाएगा। लेकिन सलाहकार मूर्ख निकल जाए तो नेताजी की नैया डूबनी तय है। अब बेवजह के पूर्व विधायक की इस रिसॉर्ट कांड की रिपोर्ट ऊपर में मांग ली गई है।

पंडित प्रदीप मिश्रा के बहाने दया ने साबित कर दिया...

इस साल जयंती स्टेडियम में शिवमहापुराण ऐतिहासिक हो गया। कई रिकॉर्ड भी बन गए। इसके आयोजक भाजपा के पार्षद, उप नेता प्रतिपक्ष दया सिंह का कद बढ़ गया। दरअसल, प्रदेशभर से लोग उनके इस आयोजन में शामिल होने आए। वीवीआईपी से लेकर सीएम, स्पीकर, मंत्री, सांसद, विधायक...सबके सब इस आयोजन में शिरकत करने के लिए पहुंचे। नेताओं ने माना कि दया सिंह का मैनेजमेंट तगड़ा रहता है। इस आयोजन में किसी प्रकार की कोई कमी नहीं थी। पंडाल भी बड़े-बड़े और आयोजन भी शानदार...। लोगों ने भी खूब तारीफ की है। वहीं पंडित प्रदीप मिश्रा ने रोज दया सिंह की पीठ थपथपाई है...। इस आयोजन के बाद दया सिंह के ऊपर कृपा बरस सकती है।

क्रांति सेना-जोहार छग पार्टी से जुड़ेंगे कई बड़े फेस...

क्या छग में तीसरे मोर्चे का भविष्य है... ? ये बड़ा सवाल है। इसका जवाब देते हुए लोग कहते हैं- असंभव भी तो नहीं है। अगर चाहे तो सब संभव। पार्टी के प्रमुख अमित बघेल के इस बार के बयान को सुनेंगे तो भविष्य की कार्ययोजना नजर आ रही है। विधानसभा चुनाव के लिए अभी से बूथ मैनेजमेंट शुरू हो गया है। साथ ही पार्टी के संपर्क में कई बड़े लोग भी हैं। जिन्हें लगता है कि प्रदेश में जोहार छग पार्टी का भविष्य उज्जवल है। ऐसे में कई बड़े चेहरे अमित बघेल के संपर्क में है। पार्टी के पास भी अमित बघेल और अजय यादव के अलावा तीसरा बड़ा चेहरा नहीं है। ऐसे में पार्टी भी चाहती है बेहतर मैनेजमेंट के लिए बड़ी शख्शियत, जो छत्तीसगढ़िया हो, वो ज्वाइन करें। ताकि चीजें मैनेज हो सके और 2028 तक पार्टी सर्वाइव कर बढ़िया चल सके। हालांकि, अमित बघेल का खौफ परदेशी नेताओं में दिख रहा है।

भिलाई में आरोग्यम वेलनेस सेंटर का हुआ शुभारंभ

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

भिलाई के सुंदर विहार कॉलोनी, नालंदा स्कूल मेन रोड में आरोग्यम वेलनेस सेंटर का विधिवत शुभारंभ हुआ। सर्व कल्याण समाज के अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह छोटू ने फीता काटकर सेंटर का उद्घाटन किया और संचालकों को नवीन शुरूआत के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह वेलनेस सेंटर लोगों को बेहतर स्वास्थ्य, आयुर्वेदिक चिकित्सा और स्वस्थ जीवनशैली की दिशा में लाभ पहुंचाएगा और सफलता के नए आयाम स्थापित करेगा। इस अवसर पर क्षेत्र के गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

तहसील अधिवक्ता संघ मोहला में कादिर सिद्दीकी निर्विरोध अध्यक्ष, पूरी कार्यकारिणी निर्विरोध निर्वाचित

नई दृष्टिबिंदु / मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी

जिले के तहसील अधिवक्ता संघ के द्विवर्षीय चुनाव में इस वर्ष पूरी कार्यकारिणी का निर्विरोध निर्वाचन हुआ है। क्राइम अधिवक्ता कादिर सिद्दीकी को तहसील अधिवक्ता संघ का निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया है।

चुनाव परिणाम के अनुसार अध्यक्ष पद पर कादिर सिद्दीकी के साथ उपाध्यक्ष पद पर हितेश मालेकर, महिला उपाध्यक्ष पद पर संघमित्रा धारगावे, सचिव पद पर संगीता शर्मा और सह सचिव पद पर गजेंद्र बोरकर निर्विरोध निर्वाचित हुए हैं। सभी पदों पर निर्विरोध निर्वाचन को संघ में आपसी सहमति, समन्वय और एकजुटता का प्रतीक माना जा रहा है। चुनाव परिणाम घोषित होते ही अधिवक्ता संघ के सदस्यों में हर्ष का माहौल है। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को अधिवक्ताओं, न्यायिक अधिकारियों और नगरवासियों ने बधाई देते हुए उनके सफल कार्यकाल की कामना की है।

यह सम्मान मेरे अग्रज संपादकों और पत्रकार साथियों का है : लक्ष्मीनारायण लहरे 'साहिल'

नई दृष्टिबिंदु / सारंगढ़

सारंगढ़-बिलाईगढ़ के वरिष्ठ पत्रकार और साहित्यकार लक्ष्मीनारायण लहरे 'साहिल' को रायपुर साहित्य सृजन संस्थान द्वारा 'श्रेष्ठ पत्रकार सम्मान 2026' से सम्मानित किया जाएगा। राजधानी के वृंदावन हॉल में 23 अगस्त को आयोजित अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में उन्हें यह सम्मान दिया जाएगा। वे पिछले 26-27 वर्षों से पत्रकारिता और हिंदी काव्य सृजन में सक्रिय हैं।

सांध्य दैनिक "नई दृष्टिबिंदु" से विशेष बातचीत में लहरे ने कहा कि यह व्यक्तिगत सम्मान नहीं है। यह मेरे अग्रज संपादकों और उन सभी पत्रकार साथियों का सम्मान है, जिन्होंने मुझे गढ़ा है। उन्होंने यह सम्मान सारंगढ़, रायगढ़, रायपुर, बिलासपुर समेत प्रदेश के संपादकों को समर्पित किया।

दोहरी यात्रा पर उन्होंने कहा, "पत्रकारिता मेरे लिए पेशा नहीं, समाज के प्रति दायित्व है। साहित्य मेरी आत्मा है।" उन्होंने बताया कि असली सम्मान तब मिलता है जब एक खबर से गरीब को न्याय मिले और एक कविता हृदय को छू जाए।

आज की पत्रकारिता और साहित्य की भूमिका पर लहरे ने कहा कि पत्रकार को निष्पक्ष, निर्भीक और जनपक्षधर होना चाहिए, सत्ता की चाटुकारिता नहीं बल्कि अंतिम व्यक्ति की आवाज बनना चाहिए। साहित्यकार को समाज का पथ-प्रदर्शक और मूल्यों का संवाहक होना चाहिए।

युवाओं को संदेश देते हुए उन्होंने कहा कि शॉर्टकट न खोजें, भाषा पर पकड़ बनाएं, खूब पढ़ें और जमीन से जुड़े रहें। धैर्य और निरंतर अभ्यास ही स्थापित करेगा।

निमार्णाधीन मकान से सेंटरिंग प्लेट चोरी : 4 आरोपी गिरफ्तार, पिकअप वाहन जब्त

दुर्ग। थाना उतई पुलिस ने निमार्णाधीन मकान से 63 नग लोहे की सेंटरिंग प्लेट चोरी के मामले का त्वरित खुलासा करते हुए 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। प्रार्थी बाबूलाल साहू (62) निवासी हथखोज पारा उतई ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि ग्राम उमरपोटी भाठा में डमडम पाण्डेय की बाड़ी के पास उसके निमार्णाधीन मकान से 19 अगस्त की रात 63 नग प्लेट कीमत करीब 45 हजार रुपये चोरी हो गई थी। थाना उतई में अपराध क्रमांक 431/2026 धारा 303(2) BNS के तहत मामला दर्ज किया गया था। सीसीटीवी फुटेज, तकनीकी साक्ष्य और मुखबिर सूचना के आधार पर पुलिस ने कार्रवाई करते हुए अजय ठाकुर (23), ईश्वर निषाद (27), चंद्रहास आडिल (25) और ललित साहू (57) को गिरफ्तार किया।

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100